वर्ष 48 । अंक 10 । अक्टूबर 2021

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 48 ● अंक 10 ● अक्टूबर 2021 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एम. पी. प्रिंटर्स बी-220 फेस-II,
नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध-सम्पादक
सुलेख साथी

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
50. रंग भरो

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

हँसती दुनिया

कहानियां

9. दशानन का उपदेश
: पृथ्वीराज

10. महान कौन
: महेन्द्र सिंह शेखावत

11. राजा का फैसला
: नरेश कुमार

20. संकट का मित्र
: डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

22. रत्ना के तीन सवाल
: रेनू सैनी

28. लालच का फल
: राजकुमार 'राजन'

32. चन्द्रगुप्त की ...
: जितेन्द्र कुमार

40. मंत्री की चतुराई
: ईलू रानी

46. सबसे बड़ा बल
: राजेश अरोड़ा

विशेष/लेख

8. दूध पीओ और स्वस्थ रहो
: विभा वर्मा

18. जहाँ वर्ष में दो बार ...
: कमल सोगानी

21. ईमू
: भव्या

24. पहेलियां
: राधा नाचीज

26. तितलियों का अनोखा संसार
: विद्या प्रकाश

30. अनार
: शिवचरण चौहान

42. कैसे लौट आते हैं कबूतर
: राजकुमार जैन

48. जानवर पहचानते हैं ...
: किरण बाला

कविताएं

7. करनी सदा भलाई है
: शोभा शर्मा

17. प्रकृति का सन्देश
: डॉ. परशुराम शुक्ल

17. चली हवा
: मीरा सिंह 'मीरा'

25. पुस्तक बोली
: कमलसिंह चौहान

25. बच्चे
: हरिन्दर सिंह गोगना

31. प्यारी चिड़िया
: सुमेश निषाद

31. कोयल
: श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

39. मैं नभ में नहीं अकेला
: राजेंद्र निशेश

39. पपीता छैल-छबीला हूँ
: कुसुम अग्रवाल

47. आयी किरण
: रामअवध राम

47. सूरज
: डॉ. तारा निगम

अपने कल से आगे बढ़ें

बच्चा पैदा होते ही चलना शुरू नहीं कर देता। धीरे-धीरे उसके शरीर का विकास होता है। लगभग एक-डेढ़ वर्ष में वह खड़ा होना सीखता है फिर चलना भी सीख जाता है। जब पहली बार बच्चा अपने बल पर स्वयं खड़ा होता है तब उसके माता-पिता बहुत खुश होते हैं कि हमारा बच्चा अपने पैरों पर खड़ा हो रहा है। फिर वह धीरे-धीरे माता-पिता का हाथ पकड़कर एक कदम चलता है फिर दो और तीन। धीरे-धीरे माता-पिता उसको चलाने के लिए बीच-बीच में अपना हाथ अलग कर लेते हैं। बच्चा गिरता है, सम्भलता है, प्रयास करता है और अन्ततः वह चलना सीख जाता है।

हम सभी बच्चे ही थे। अब कोई बालक, वयस्क, जवान और प्रौढ़ भी हो गए होंगे परन्तु अब किसी को यह समझाना नहीं पड़ता कि चलना कैसे सीखा जाए।

आजकल सभी अपने बच्चों को अक्सर कहते रहते हैं कि आपको अपनी कक्षा में प्रथम आना है, चाहे एक क्लास में चालीस बच्चे हों या पचास, सभी बच्चों को उनके माता-पिता कक्षा में प्रथम आने का ही सुझाव देते हैं और प्रोत्साहित भी करते हैं। इस तरह बच्चा एक विद्यार्थी की तरह सीख भी जाता है कि मुझे प्रथम ही आना है। यह भी सत्य है कि प्रथम तो एक ही विद्यार्थी आ पायेगा सभी नहीं। इस प्रकार यह प्रक्रिया जीवन के हर क्षेत्र में इसी तरह ही बढ़ती चली जाती है और प्रतिस्पर्धा एवं द्वंद्व का रूप भी धारण कर लेती है क्योंकि बचपन से ही हमारी अवधारणा बना दी जाती है और हम न भी चाहें तो भी जाने-अनजाने एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लग जाते हैं।

प्यारे साथियों! प्रतिस्पर्धा तो जीवन के हर क्षेत्र में आती ही है परन्तु स्वस्थ मन और जागरूक चित्त की दशा उसे सुन्दर एवं आकर्षक रूप भी दे सकती है। जीत या हार केवल एक की हो सकती है। अगर जीतने वाला हारने वाले को शुभकामना दे सके कि आगे बढ़ो और जो कमी इस बार हुई आगे न हो और आप कामयाब होंगे तो वही उसकी वास्तविक जीत होगी। इसी तरह हारने वाला भी जीतने वाले की प्रशंसा करे, उसको दिल से बधाई दे और उसके प्रदर्शन की रणनीति की कला भी सीखें तब ही उत्तम होगा।

जीवन के हर क्षेत्र में चाहे व्यापार हो, कारोबार हो, बाजार हो या घर-परिवार हो सभी की भावना शुभ और शुद्ध होगी तो खुशहाली हर जगह आएगी। हम बचपन से ही यह बात धारण कर लें कि जैसे हमने पहले चलना सीखा तब चल पाए, अब यह सीखें कि हमें और बेहतर बनना है, ऊँचा उठना है और आगे बढ़ना है तो हमें अपने आप से हर दिन एक कदम आगे बढ़ना है। अपने बीते कल से सीखकर आज में स्थित होना है और इसी आज से हमारे आने वाले कल का जन्म होगा। जहाँ फिर कोई द्वंद्व नहीं रहेगा और बस जिन्दगी का हर पल पहले से बेहतर होगा।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 242

दातां नाल प्रीति पा के भुलया एं सच्चा दातार।
अंतकाल कुझ नाल नहीं जाणा पसरया रहणा ए पासार।
संगी साथी साक संबन्धी मतलब दे ही सारे ने।
भीड़ पवे ते परख के तक्कीं हुंदे किवें किनारे ने।
दुख सुख विच जो साथ निभावे सन्त ही इक उपकारी ए।
कहे अवतार बिनां सन्तां दे मतलब दी सभ यारी ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि प्रभु-परमात्मा सबको देने वाला, सबका दाता है। यह सभी जीव-जन्तुओं को अन्न, जल, जीवन देता है। इन्सान की हालत यह है कि यह देने वाले से प्रेम न करके दी हुई दातों से प्रेम करता है। परमात्मा की दातें हैं भी अत्यन्त आकर्षक और लुभावनी। इस संसार का फैलाव बहुत ज्यादा है। दूर-दर तक इस प्रभु की माया का ही विस्तार नज़र आता है। परमात्मा की दी हुई दातें तन, यौवन, धन, मान आदि इन्सान को बहुत प्रिय लगते हैं। इन्सान को इसकी दी हुई दातें-सौगातें इतनी ज्यादा अच्छी लगती हैं कि यह इन दातों को देने वाले सत्य प्रभु-परमात्मा दातार को भूलकर इन दातों में ही उलझकर रह जाता है। इन्सान को यह विधिवत पता है कि अंतकाल में किसी के साथ कुछ भी नहीं जाना है। एक छोटी-सी सुई भी मृत्यु के बाद साथ नहीं जाती। यहाँ का जो कुछ भी है वह यहीं रह जाना है, यहाँ तक कि यह सुन्दर शरीर भी साथ नहीं जाता।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि संगी-साथी, सगे रिश्तेदार, मित्र सब मतलब के हैं। जब कठिन समय आता है, मुसीबतें एक साथ आक्रमण करती हैं तब देख लेना ये अपने नज़र आने वाले कोई साथ नहीं देंगे। ये बड़ी चालाकी और बहाने से किनारा कर जाएंगे।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि संसार में अगर सब मतलब के ही साथी हैं तो कोई तो ऐसा होगा जो आपका सच्चा साथी होगा, जो अन्त तक प्रीत निभाने वाला होगा। सन्त ही ऐसे उपकारी हैं जो सुख और दुख दोनों में साथ निभाते हैं। सन्तों की मित्रता सच्ची है। मुसीबत के समय साथ देने वाली है। सन्तों के अलावा बाकी सारे संसार की मित्रता मतलब की है, स्वार्थ पर आधारित है। इसलिए हे मानव समय रहते सद्गुरु का संग कर लो, इस अंग-संग बसने वाले रमे राम को जान लो और अपना जीवन सफल कर लो। दुनिया की दातों की भूल-भुलैया में न पड़कर सद्गुरु की अनमोल सौगात प्राप्त कर लो। इस प्रकार सन्त की कृपा से तुम्हारा जीवन सुखमय हो जाएगा।

भावार्थ: हरजीत निषाद

संकलन : श्रीराम प्रजापति

अनमोल वचन

❖ जब हम बगैर समझ के किसी भी कार्य को करते हैं तब हमें उसका पूरा लाभ नहीं होता। ऐसे ही भक्ति में भी जब कोई कर्म किया जाए तो उसका तर्क और अर्थ पता होना आवश्यक है। अन्यथा वह कर्मकाण्ड की श्रेणी में आ जाएगा और वह फिर वहम और भ्रम का रूप ले लेगा।

❖ निरंकारी मिशन में भी अनेक ऐसे कर्म हैं जिनका युवा पीढ़ी को शायद पूर्ण उद्देश्य नहीं पता होगा। इसलिए उनके मन में प्रश्न आना स्वाभाविक है। जैसे हम चरणामृत बनाते हैं तो उस सन्त में सद्गुरु का रूप देखकर बनाते हैं। इसमें भाव प्रधान है। भाव और विश्वास है तभी एक साधारण सा जल औषधि का कार्य करता हैं विश्वास के बिना तो औषधि भी किसी काम की नहीं है।

❖ जब हम बारिश में भीग रहे होते हैं और एक घने वृक्ष की ओट मिल जाए तो हम भीगने से बच जाते हैं। ऐसे ही निरंकार की ओट हमें दुख और बेचैनी से बचाती है। हमें सुरक्षित महसूस करवाती है। हम जीवन में सहज रूप से तैरते हुए इस यात्रा को पूरा करते हैं। एक इमारत जब बन रही होती है तो उसे बांस के एक जाल से सहारा दिया जाता है। ऐसे ही नाव को एंकर (कील) से बांध दिया जाए तो वह तूफान में भी स्थिर अवस्था में रहती है क्योंकि वह कील जमीन में मजबूती से जुड़ी होती है। निरंकार का सहारा भी इसी प्रकार हमें जीवन के तूफानों में भटकने नहीं देता। निरंकार के इसी एहसास को एक ब्रह्मज्ञानी संत अपने तन मन में रचा बसाकर अपनी हर इक स्वास को इस प्रभु में समर्पित करके ही जीवन जीता है और दिन-रात का अर्थ यही है कि हर वक्त इस रमे राम का आसरा और ध्यान बना रहे।

– सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

❖ क्रोध की अवस्था में दस बार सोचकर कर बोलो – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

❖ मनस्वी वही है, जो बीते पर आँसू नहीं बहाता, भविष्य के लिए मनमोहक सपने नहीं संजोता, अपितु वर्तमान को ही दुधारू गाय की तरह दूहता है। – गेटे

❖ उल्लास का प्रमुख सिद्धान्त स्वास्थ्य है और स्वास्थ्य का प्रमुख सिद्धान्त है कसरत।

– टॉमसन

❖ विश्वास शक्ति है। – राबर्टसन

❖ संसार ही महापुरुष को ढूंढ़ता है न कि महापुरुष संसार को। – कालिदास

❖ जो अपनी इज्जत करते हैं उनकी सब इज्जत करते हैं। – बेकन्स फील्ड

बाल गीत : शोभा शर्मा

करनी सदा भलाई है

विजय सत्य की हुई हमेशा,
हारी सदा बुराई है।
आया पर्व दशहरा कहता,
करनी सदा भलाई है।।

रावण था दम्भी अभिमानी,
उसने छल-बल दिखलाया।
बीस भुजा दस सीस कटाए,
अपना कुनबा मरवाया।।

अपनी ही करनी से लंका,
सोने की जलवाई है।
मन में कोई कहीं बुराई,
रावण जैसी नहीं पले।
और अंधेरी वाली चादर,
उजियारे को नहीं छले।।

जिसने भी अभिमान किया है,
उसने मुँह की खाई है।

आज सभी की यही सोच हो,
मेल-जोल खुशहाली हो।
अंधकार मिट जाए सारा,
घर-घर में दीवाली हो।

मिली बड़ाई सदा उसी को,
जिसने की अच्छाई है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

दूध पिओ स्वस्थ रहो

पशु हो या मानव शिशु उसका प्रारम्भिक आहार दूध से ही शुरू होता है। इसमें सभी प्रकार के विटामिन, प्रोटीन, वसा संतुलित मात्रा में विद्यमान रहता है। यह पृथ्वी के सभी जीवधारियों के लिए अमृत तुल्य है।

गाय का दूध गुणवत्ता, कार्य और प्रभाव की दृष्टि से माता के दूध के समान ही प्रभावशाली है। इसलिए भारतीय संस्कृति में गाय को माता की पदवी दी गई है। उसे हम गौमाता कहकर विभूषित करते हैं। गाय का दूध रस और प्रकृति (तासीर) में मधुर, शीतल, पुष्टिकारक, बलदायक एवं बुद्धि को उत्तम करने वाला, आयु को बढ़ाने वाला और ओजवर्द्धक होता है। आयुर्वेद में वर्णन है कि जो बालक, वृद्ध, रोगी, दुर्बल एवं अनेक बीमारियों से घिरा हो अगर गाय के दूध का नियमित सेवन करे तो उसमें स्फूर्ति, कांति एवं मुख की सुन्दरता में वृद्धि होती है। गाय का दूध बुढ़ापे के प्रभाव को भी नष्ट करता है। मनुष्यों के लिए यह गुणकारी एवं संतुलित पेय है।

कई परिवारों में बकरी का दूध भी सेवन किया जाता है। इसका दूध भी कई रोगों में फायदेमंद होता है। यही कारण है कि महात्मा गाँधी ने बकरी के दूध का सेवन करने की सलाह दी थी। बकरी छोटे शरीर वाली चटपटे कड़वे पदार्थों को खाती है, पानी थोड़ा पीती है और घूमने-फिरने में श्रम ज्यादा करती है जिससे अनेकों प्रकार की वनोषधियों को भी चरती रहती है। अतः इसका दूध कई रोगों को भी दूर करने में सक्षम है। गाय का दूध मानव शरीर, बालक, वृद्ध सभी के लिए सर्वोत्तम है तो बकरी का दूध बीमार व्यक्ति के लिए गुणकारी है। अतः बकरी का दूध अगर कसैला भी तुम्हें लगे तो पीने में ना-नुकर अब नहीं करोगे क्योंकि बकरी जंगल में अनेकों प्रकार के पेड़-पौधों की पत्तियों का भक्षण करती रहती है। जिससे कई रोग स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं।

प्रेरक-प्रसंग : पृथ्वीराज

दशानन का उपदेश

राम और रावण का युद्ध समाप्त हो चुका था। रावण मृत्यु की अवस्था में युद्धभूमि पर पड़ा था। परन्तु राम के चेहरे पर खुशी के भाव और आँखों में विजय की चमक नहीं थी। यह देख लक्ष्मण को हैरानी हुई। वह राम से कुछ पूछता उससे पहले ही राम ने कहा– लक्ष्मण हमारी विजय अवश्य हुई परन्तु आज यह संसार एक महान पंडित और परम विद्वान विहिन होने जा रहा है। तुम जाकर महान ज्ञानी रावण से राजनीति का गुरुमंत्र प्राप्त करो।

लक्ष्मण रणक्षेत्र में पड़े रावण के सिरहाने जाकर खड़े हो गये और बोले– हे महान विद्वान रावण मैं राम का छोटा भाई लक्ष्मण आपसे शिक्षा ग्रहण करने आया हूँ। मुझे उपदेश दीजिए।

लक्ष्मण की बात सुनकर रावण बोला– जिस व्यक्ति में विनय न हो वह शिष्य बनने योग्य नहीं होता। तुम अस्त्र लिए मेरे सिरहाने खड़े हो। क्या यही शिष्टाचार है?

लक्ष्मण तुरन्त अस्त्र छोड़कर रावण के पैरों की ओर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया तब रावण का उपदेश देते हुए बोला– लक्ष्मण! तुम ऐसे समय में आये हो, जब मेरा जीवन-दीप बुझने ही वाला है। मैं तुम्हें विद्या पूरी तरह से नहीं पढ़ा सकता। फिर भी सम्पूर्ण विद्याओं का निचोड़ अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर मैं तुम्हें बताता हूँ।

कुछ समय पश्चात् रावण ने बताया– मेंने कठोर तपस्या करके अत्याधिक बल प्राप्त किया और उसका प्रयोग मैंने अपने स्वार्थ के लिए किया। इससे मेरे अनेक शत्रु हो गये। यहाँ तक कि मेरा भाई विभीषण भी मेरा शत्रु हो गया। मैंने कभी भी अपनी शक्ति का प्रयोग दूसरों की भलाई के लिए नहीं किया।

मैंने अपने शत्रु को सदा स्वयं से छोटा और निर्बल ही समझा। इसी भूल में आज मैं इस स्थिति में पहुँच गया हूँ। अपने शत्रु को कभी छोटा नहीं समझना चाहिए।

सुनो लक्ष्मण! जीवन में मेरी तीन इच्छाएं थीं। जिन्हें पूरा करने की मेरे पास शक्ति और सामर्थ्य भी थी। लेकिन मैं उन्हें पूरा नहीं कर सका।

वे इच्छाएं थीं– सीढ़ी द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी को मिलाना। अग्नि को धुएं रहित कर देना और मृत्यु को नष्ट कर देना।

ये तीनों बातें मेरे लिए सरल थीं। स्वर्ग तक सीढ़ी लगाने का विज्ञान मैं जानता हूँ। अग्नि को धुएं रहित करने की विद्या भी मुझे आती थी। मृत्यु मेरे कारागार में कैद थी। मैं जब चाहता, उसे नष्ट कर सकता था। लेकिन मैं सोचता था– जल्दी क्या है? ये काम कल कर लूंगा। यही सोचते-सोचते मेरा काल आ गया लेकिन कल कभी नहीं आया। मेरा गुरुमंत्र यही है कि व्यक्ति को आज का काम कल पर कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

यह वाक्य कहते-कहते रावण ने सदा के लिए अपने नेत्र बन्द कर लिए। लक्ष्मण उस महाज्ञानी को शीश झुकाकर अपने भाई श्रीराम के पास लौट आया।

बोधकथा :
महेन्द्र सिंह शेखावत

महान कौन?

दीपावली का समय। चारों ओर दीपक ही दीपक झिलमिला रहे थे। तभी उनमें से एक दीपक बोला– ''देखो, मैं अंधेरे को दूर करके प्रकाश फैला रहा हूँ।''

इतना सुनते ही दीपक में जल रही बत्ती बोली, ''दीपक भैया, प्रकाश तो मैं फैला रही हूँ, देख लो मैं ही जल रही हूँ।''

बत्ती की बात सुनकर तेल झट से बोल पड़ा– ''बत्ती, तुम भी मेरे बिना नहीं जल सकती! तुम मेरे माध्यम से ही जल कर प्रकाश फैला रही हो, इसलिए तुम से मैं महान् हूँ।''

इस प्रकार तीनों आपस में बहस करने लगे।

दीपक कहने लगा– ''मैं महान् हूँ, मेरे बिना तुम्हारी कोई सार्थकता नहीं, तो तेल और बत्ती भी अपने आपको महान् कहने लगे।

उनकी बातें सुनकर मिट्टी बोली– ''दीपक, तुम महान् हो क्योंकि तुमने तेल और बत्ती दोनों को आश्रय दे रखा है, लेकिन मेरे बिना तुम्हारा भी अस्तित्व नहीं हो सकता। इसलिए अपनी-अपनी जगह सभी का महत्व होता है और अपनी-अपनी जगह सभी महान् होते हैं। यदि हम सब आपस में एक-दूसरे का सहयोग ना करें तो यह प्रकाश उत्पन्न नहीं हो सकता। प्रकाश के लिए हमारा आपस में सहयोग नितांत आवश्यक है।

अब मिट्टी की बात सुनकर सब चुप हो गये थे।

प्रस्तुति : नरेश कुमार (रांची)

राजा का फैसला

सिकन्दर के पिता राजा फिलिप के दरबार में एक सिपाही के मुकदमे की सुनवाई चल रही थी। इस बीच राजा फिलिप को अचानक नींद आ गयी पर मुकदमे की सुनवाई चलती रही। सुनवाई खत्म होते ही फिलिप की नींद टूट गई और उसने सिपाही को दण्डित करने का फैसला सुना दिया।

फैसला सुनकर सिपाही ने जवाब दिया– फैसला गलत दिया गया है, मैं अपील करता हूँ।

राजा फिलिप का फैसला अन्तिम था। उसके खिलाफ अपील का तो कोई सवाल ही नहीं था। अतः राजा मुस्कुराकर बोला– आखिर तुम यह अपील करोगे किसके पास?

सिपाही ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा– मैं सोते हुए राजा फिलिप के विरुद्ध जागे हुए राजा फिलिप के आगे अपील करता हूँ।

सिपाही का उत्तर सुनकर राजा निरुत्तर हो गया और उसने फैसला ठीक करते हुए सिपाही को माफी दे दी।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
– अजय कालड़ा

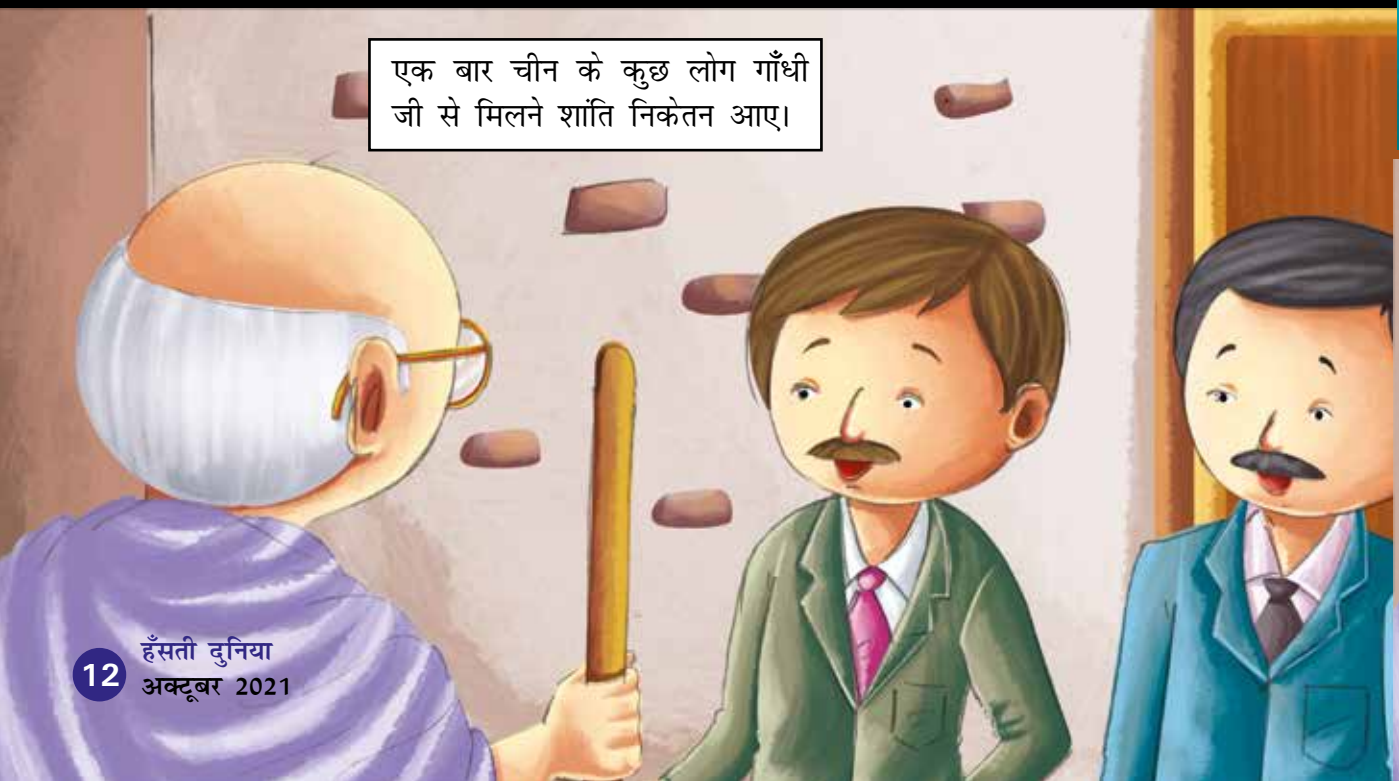

उन्होंने गाँधी जी को एक सुन्दर-सा खिलौना दिया और कहा कि यह हमारे देश में बहुत ही मशहूर है। गाँधी जी इन तीन बंदरों के सेट को देखकर बहुत खुश हुए।

उनमें से एक बंदर ने अपनी आँखों पर और दूसरे ने अपने कानों पर एवं तीसरे ने अपने मुँह पर अपना पंजा रखा हुआ था। यह खिलौना जापान और चीन दोनों देशों की संस्कृति से जुड़ा हुआ है।

यह खिलौना बहुत सुन्दर है। मैं इसे हमेशा अपने साथ रखूंगा।

उसके बाद गाँधी जी जहाँ भी जाते, उस खिलौने को हमेशा अपने पास रखते और उसका बहुत ध्यान भी रखते। जो लोग उनके साथ काम करते थे, उन्हें ये सब देखकर बड़ा आश्चर्य होता था।

एक दिन गाँधी जी उस खिलौने को सामने रखकर बड़े ध्यान से देख रहे थे। उनके एक साथी ने पूछा– 'बापू, आप इस साधारण से खिलौने को इस तरह देखते रहते हैं जैसे इससे कोई विशेष यादें जुड़ी हों।'

गाँधी जी बोले– 'ये कोई साधारण खिलौना नहीं है। ये जो बंदर बने हुए हैं। ये तीनों हमें अलग-अलग शिक्षा देते हैं। देखो, ये बंदर जिसने अपनी आँखों पर हाथ रखा है। यह समझाता है कि कभी बुरा मत देखो और इसका नाम मिजारू बंदर है।

दूसरा बंदर जिसने अपने कान बंद किए हुए हैं। यह सिखाता है कि कभी बुरा मत सुनो। इसका नाम किकाजारू बंदर है।

तीसरा बंदर जिसने मुँह पर हाथ रखा है। यह समझाता है कि कभी बुरा मत बोलो और इसका नाम इवाजारू बंदर है।

गाँधी जी ने कहा– 'बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो' की यह सीख मैं घर-घर तक पहुँचाना चाहता हूँ ताकि सभी लोग बुराई से बच सकें।

ओह! तभी सब लोग बोलते हैं– गाँधी जी के तीन बंदर।

हाँ बच्चों। और हम भी अगर इन तीन बातों का ध्यान रखें तो बुराई से दूर रह सकते हैं और अच्छे इंसान बन सकते हैं।

भारत का सर्वश्रेष्ठ ओलम्पिक

7 मेडल जीतकर रचा इतिहास

भारत ने टोक्यो ओलम्पिक में एक स्वर्ण, दो रजत और चार कांस्य सहित कुल सात पदक जीते। यह ओलम्पिक में देश का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। इससे पहले 2012 लंदन ओलम्पिक में भारत को दो रजत और चार कांस्य के साथ कुल छह पदक मिले थे।

टोक्यो ओलम्पिक में भारत के भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा, अभिनव बिंद्रा के बाद किसी व्यक्तिगत स्पर्धा में गोल्ड जीतने वाले दूसरे खिलाड़ी बन गए।

वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने सिल्वर मेडल अपने नाम किया। 21 साल बाद उन्होंने भारत को भारोत्तोलन में पदक दिलाया। इससे पहले 2000 सिडनी ओलम्पिक में कर्णम मल्लेश्वरी ने कांस्य पदक जीता था।

रवि दहिया ओलम्पिक में कुश्ती में रजत पदक जीतने वाले दूसरे पहलवान बने। इससे पहले सुशील कुमार ने भी 2012 लंदन ओलम्पिक में रजत पदक जीता था।

टोक्यो ओलम्पिक में भारतीय बैडमिंटन स्टार पीवी सिंधु ने कांस्य पदक जीतकर लगातार दूसरे ओलम्पिक में पदक अपने नाम किया। इससे पहले रियो ओलम्पिक में वह रजत पदक जीती थीं।

टोक्यो ओलम्पिक में भारतीय मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन ने कांस्य पदक अपने नाम किया। वह मुक्केबाजी में कांस्य मेडल जीतने वाली तीसरी भारतीय खिलाड़ी हैं। इससे पहले यह कारनामा विजेंद्र सिंह (2008) और एमसी मैरी कॉम (2012) कर चुके हैं।

भारतीय पहलवान बजरंग पूनिया का स्वर्ण पदक जीतने का सपना तो पूरा नहीं हो पाया लेकिन वह टोक्यो में कांस्य पदक अपने नाम करने में सफल रहे। इस ओलम्पिक में वह रवि दहिया के अलावा पदक जीतने वाले अन्य भारतीय पहलवान रहे।

टोक्यो ओलम्पिक में भारत की पुरुष हॉकी टीम ने चार दशकों बाद पदक जीता। टीम को कांस्य पदक मिला। ओलम्पिक में हॉकी में यह भारत का 12वां मेडल था।

– साभार : दैनिक जागरण

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

प्रकृति का सन्देश

सूरज रोज निकलता क्यों है?
चन्दा क्यों छिप जाता है?
आसमान का हर एक तारा,
क्या सन्देशा लाता है?

सूरज कहता मुझको देखो,
रोज मिटाया जाता हूँ।
फिर भी नित्यनियम से अपने,
नया सवेरा लाता हूँ।।

चन्दा कहता मेरी छाया,
मीठी नींद सुलाती है।
थके हुए बोझिल तन मन में,
नयी चेतना लाती है।।

आसमान का इक-इक तारा,
यह सन्देशा लाता है।
मानव का मानव से रिश्ता,
मानवता कहलाता है।।

बाल कविता : मीरा सिंह 'मीरा'

चली हवा

ठंडी ठंडी चली हवा,
मन को लगती भली हवा।

इधर चली उधर चली,
शोख है मनचली हवा।

दस्तक दे दरवाजे पर,
तितली संग उड़ चली हवा।

पेड़ों की डाली पर झूलती,
दुखदर्द सब भूली हवा।

कलियों के संग की ठिठोली,
फूलों के संग झूमी हवा।

कोई इसको पकड़ न पाए,
देखो देखो उड़ चली हवा।

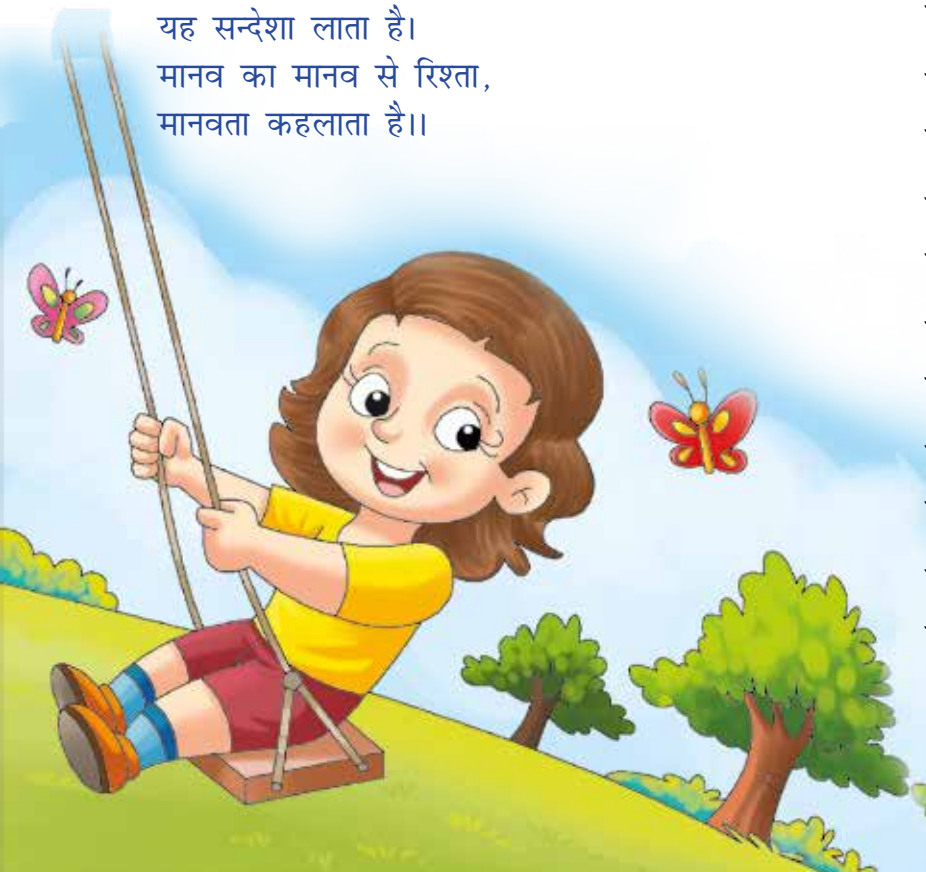

जानकारीपूर्ण लेख : कमल सोगानी

जहाँ वर्ष में दो बार रावण का दहन होता है

राजस्थान के हाड़ौती अंचल में दशहरा उत्सव की खुशियां अजीबोगरीब ढंग से मनाई जाती हैं। यहाँ के कस्बों में दशहरे से पूर्व रामलीला का मंचन किया जाता है। रामलीला में हर पात्र की भूमिका केवल पुरुष ही निभाते हैं। वे अपने चेहरों पर तरह-तरह के मुखौटे लगाकर रावण का खूब मजाक उड़ाते हैं।

हाड़ौती अंचल में वर्ष में दो बार रावण वध करने की परम्परा है। यहाँ के ग्रामीण क्षेत्रों में कई स्थलों पर रावण के पुतले की जगह मिट्टी की विशाल देह वाली मूर्ति बनाई जाती है जिसे दशहरे के दिन खूब सुन्दर ढंग से सजाया जाता है। उसके मुँह व पेट के अन्दर लाल रंग से लबालब भरी मटकियां रखी जाती हैं। दशहरे के दिन राम की सेना तीर चलाकर रावण का वध करती है। वध के दौरान उसके धड़ व पेट से लहू जैसा लाल रंग टपकने लगता है।

रावण की मूर्ति को धराशायी होते देखकर गाँव वाले खूब जोर-जोर से हँसते हैं। वे अपनी लाठियों से रावण का धड़ पीटते हैं। गाँव के लोग उस मिट्टी को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में अपने घर ले जाते हैं।

हाड़ौती के कुछ हिस्सों में दशहरे के दिन घोड़े व शस्त्रों का पूजन किया जाता है ताकि आने वाले समय में कोई विपत्ति न आये। वहाँ के अंचलों में इस दिन घुड़दौड़ के अतिरिक्त ऊँट-बैल व गधों की दौड़ भी होती है। दौड़ में प्रथम आने वाले पशुओं के मालिक को 'रावण' खिताब से सम्मानित किया जाता है।

हाड़ौती अंचल में दशहरे की अनोखी विशेषता है। चेत (चैत्र) मास की नवरात्रि के समापन के दिनों यहाँ दशहरे जैसा माहौल बन जाता है। लोग रावण का वध करने के लिये अपने घरों से तलवारें लेकर आते हैं। फिर अपनी बड़ी-बड़ी मूंछों पर बट देकर रावण की प्रतिमा

का वध करते हैं। वध की हुई रावण की मिट्टी के कुछ अंश को ग्रामीण अपने खेत में छिड़कते हैं उनका विश्वास है कि ऐसा करने पर जंगली जानवर व चूहों से फसल को कोई हानि नहीं होगी।

दशहरे के एक दिन पूर्व यहाँ के ग्रामों में ग्रामीण धार्मिक स्थलों पर जोखिम भरे करतब भी प्रस्तुत करते हैं।

हाड़ौती में दशहरे के दिन लाल मुँह के बन्दरों को भरपेट शुद्ध भोजन भी खिलाया जाता है। ग्रामीण लोग एक विशेष किस्म का ढोल लेकर जंगल में पहुँचते हैं। फिर ढोल को जोर-जोर से पीटकर एक निराली आवाज निकाली जाती है। जिससे मोहित होकर लाल मुँह के बन्दर एक-एक करके जमा होने लगते हैं। गाँव का सरपंच इन बन्दरों को पतलों में खाना परोसता है और बन्दर बड़े चाव से भोजन ग्रहण करते हैं। ग्रामीणों का मानना है कि रामभक्त हनुमान इस दिन बंदर का भेष बनाकर भोजन ग्रहण करने आते हैं।

हाड़ौती के अजीबोगरीब उल्लास में अब कई विदेशी पर्यटक भी दिखाई देने लगे हैं। जो वध करते रावण की तस्वीरें अपने कैमरे में कैद कर अपने-अपने देशों में ले जाते हैं।

बोधकथा : डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

संकट का मित्र

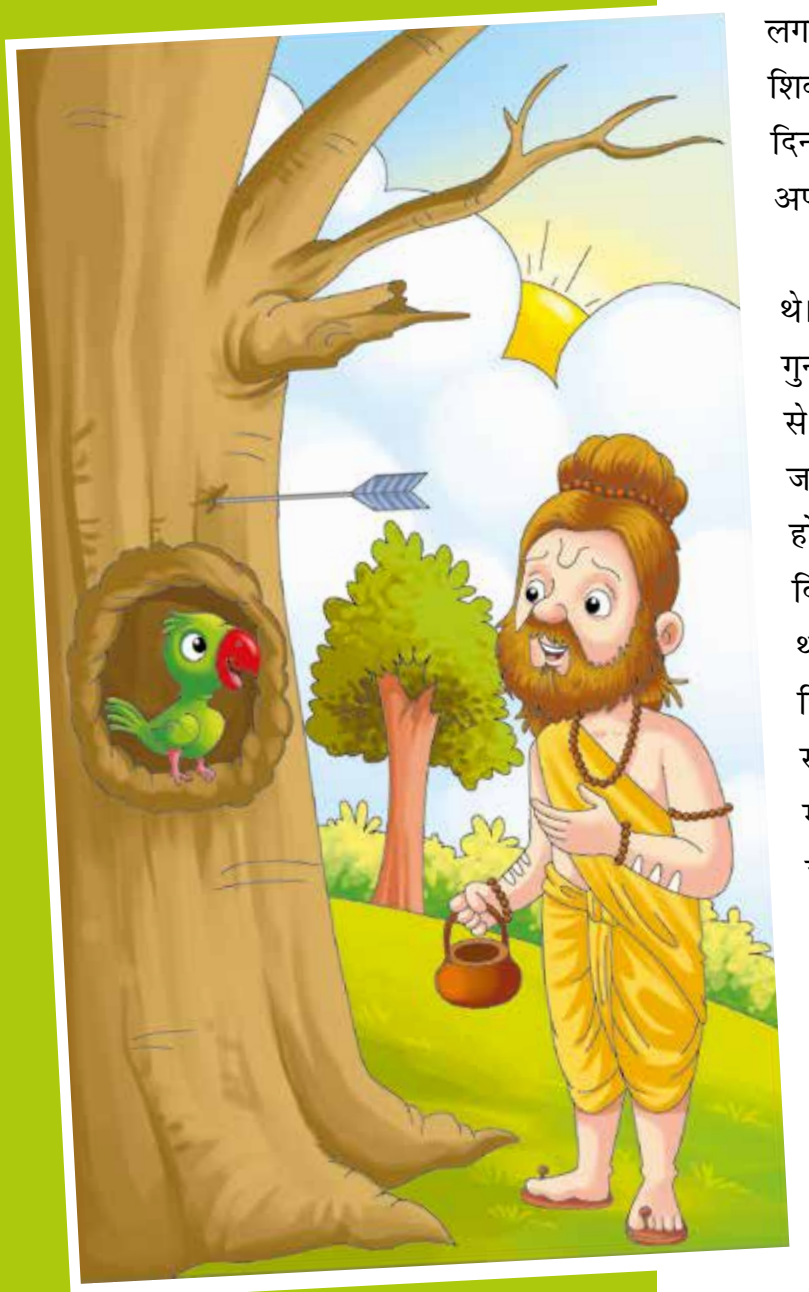

एक शिकारी को पूरे दिन भर शिकार नहीं मिला। वह परेशान हो उठा। उसके पास एक विष-बुझा तीर था। क्रोध से भरा शिकारी हताश होकर घने जंगल में प्रवेश कर गया। तभी उसे कुछ मृग दिखाई पड़े। उसने उचित निशाना साधा और तीर चला दिया। मृग भाग निकले। निशाना चूक गया था। तीर मृगों को न लगकर एक विशाल वटवृक्ष में जा लगा। शिकारी समझ गया कि यह वृक्ष ज्यादा दिन का मेहमान नहीं है। अतएव शिकारी अपने घर पर लौट आया।

उस वटवृक्ष पर अनेक पक्षी रहते थे। वे वृक्ष पर लगे फल खाते और गीत गुनगुनाया करते। विष-बुझे तीर के प्रभाव से वृक्ष सूखने लगा। डालियां सूखकर जमीन पर गिरने लगीं। पक्षी भयभीत होकर अपने घोंसले छोड़ने लगे। उस विशाल वृक्ष के कोटर में एक तोता रहता था। वटवृक्ष पर आए इस संकट से वह चिन्तामग्न हो गया। वह अनेक वर्षों से वहीं रहता था और इस संकटकाल में वृक्ष को छोड़कर अन्यत्र जाना नहीं चाहता था।

उधर देवराज इन्द्र यह सब देख रहे थे। वे ब्राह्मण का स्वरूप धरकर तोते के पास आए। बोले– ''तुम इस सूखे वृक्ष के कोटर में क्यों पड़े हो? इसको छोड़ दो।''

तोता बोला– ''देवराज! मैंने आपको पहचान लिया। आपका हार्दिक स्वागत

है।'' इन्द्र आश्चर्य विभोर थे। बोले– ''इस वृक्ष की आयु पूरी हो चुकी है। अब इस पर फल नहीं होंगे। तुम अब किसी अन्य बड़े पेड़ पर चले जाओ। वहाँ पर अन्य पक्षी साथी और फल भी मिलेंगे। हरे पत्तों से ढका कोटर भी मिलेगा। जीवन भी सुरक्षित रहेगा।''

तोते ने उत्तर दिया– ''देवराज! यह वृक्ष मेरा जन्म से साथी है, मैंने इसी वृक्ष के कोटर में आँखें खोली हैं। यहीं पर बड़ा हुआ और शिक्षा पाई। इस वृक्ष ने बड़े-बड़े संकटों में मेरी सुरक्षा की। इसी पर खेला-कूदा हूँ। अब इस संकट की घड़ी में इसे कैसे छोड़ दूँ।''

तोते की बात सुनकर देवराज इन्द्र मन ही मन प्रसन्न हो उठे। उन्होंने कहा– ''मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। तुम कोई वर मांग लो।''

तोते ने कहा– ''अगर वर देना ही है तो इस वृक्ष को पुनः हरा-भरा कर दीजिए। बस यही मेरी इच्छा है।''

इन्द्रदेव बोले– ''वत्स ऐसा ही होगा।'' देवराज ने उस वृक्ष पर अमृत की वर्षा कराई। वृक्ष हरा-भरा हो गया। उस पर पुनः फल आने लगे। पक्षी फिर से वृक्ष पर कलरव करने लगे।

देवराज बोले– ''मित्र हो तो तुम्हारे जैसा।'' वृक्ष ने भी तोते की खूब प्रशंसा की।

सच्चा मित्र वही होता है जो संकट में साथ देता है। संकट ही सच्चे मित्र की पहचान कराता है।

ईमू
एक बड़ा-सा पक्षी

ईमू एक ऐसा पक्षी है, जिसका नम्बर शुतुरमुर्ग के बाद आता है। इस प्रकार ईमू संसार का दूसरे नंबर का सबसे बड़ा पक्षी है। ईमू की संख्या काफी कम रह गई है। वैसे इनकी सबसे बड़ी संख्या ऑस्ट्रेलिया में पाई जाती है। कुछ अन्य देशों में भी ईमू चिड़ियाघरों की शोभा बढ़ा रहा है।

शुतुरमुर्ग की तरह ईमू भी उड़ने के मामले में लाचार है परन्तु जब दौड़ने की बारी आती है तो ईमू 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ लगा लेता है। आमतौर पर ईमू का पूरा शरीर भारी एवं गठा हुआ है। शरीर पर छोटे-छोटे पंख पाए जाते हैं इसकी गर्दन काफी लम्बी होती है। जिसे यह बड़ी सरलता से इधर-उधर घुमाता रहता है।

सामान्य रूप से ईमू की दो जातियां पाई जाती हैं। पहली ईमू ड्रोमेअस नोवोदालेंडी और दूसरा काला ईमू यानि ड्रोमेअस माइनर। आमतौर पर ईमू का भार 50 से 55 किलोग्राम तक होता है तथा ऊँचाई 180 से.मी. से 185 से.मी. तक पाई जाती है।

प्रस्तुति : भव्या

कहानी : रेनू सैनी

रत्ना के तीन सवाल

राजकुमारी रत्ना राजा अजीतसिंह की इकलौती पुत्री थी। वह अपनी पुत्री रत्ना के लिए सुयोग्य वर की तलाश में थे। राजकुमारी रत्ना अत्यंत विदुषी और शिक्षित थी। अनेक राजकुमार राजकुमारी से विवाह करने के लिए लालायित थे। कई राजकुमारों ने राजा अजीत सिंह के पास राजकुमारी रत्ना से विवाह करने का प्रस्ताव भिजवाया।

एक दिन राजा रत्ना से बोले, ''बेटी, अब तुम्हारी विवाह की आयु हो गई है। तुम्हारे रूप और गुणों को देखते हुए अनेक राजकुमारों के विवाह प्रस्ताव आए हुए हैं। यदि तुम कहो तो उनसे बात चलाई जाए।''

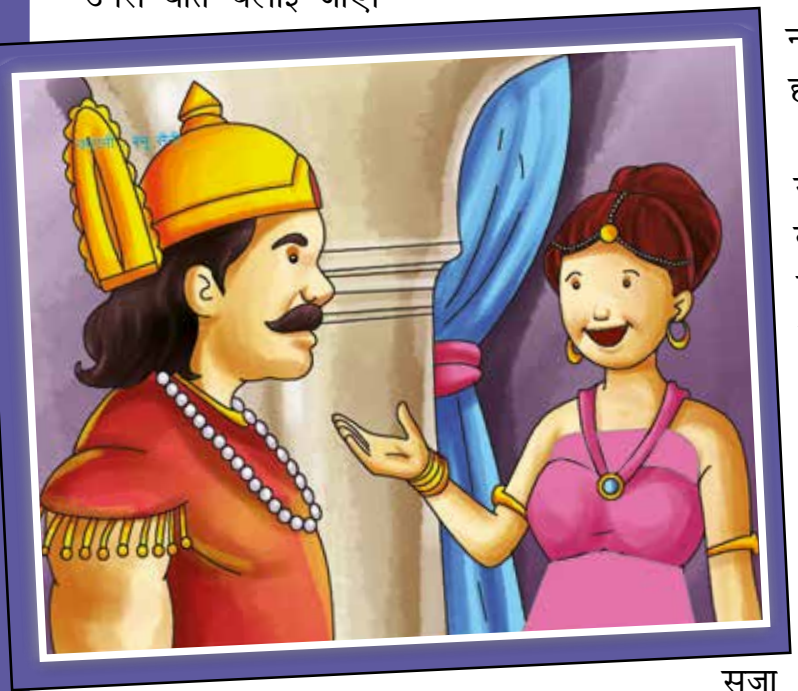

अजीतसिंह की बात सुनकर राजकुमारी रत्ना बोली, ''पिताजी, मैं चाहती हूँ कि मेरा विवाह एक नेक, ईमानदार और योग्य व्यक्ति से हो। फिर चाहे वह राजकुमार हो या नहीं, मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि योग्य व्यक्ति साधारण किसान भी है तो वह अपनी बुद्धि और कौशल से अपने स्तर को ऊपर उठा लेगा।'' रत्ना की बात सुनकर राजा बोले, ''बेटी, यदि कोई भी व्यक्ति तुम्हारे सवालों का जवाब नहीं दे पाया तो फिर क्या तुम कुंवारी रहोगी।''

रत्ना बोली, ''पिताजी, मेरे सवाल बहुत आसान हैं। जो भी व्यक्ति बुद्धिमान, नेक और ईमानदार होगा वह अवश्य ही उन प्रश्नों के जवाब दे देगा।''

राजा अजीतसिंह ने सब ओर मुनादी करवा दी कि राजकुमार से लेकर साधाारण युवक तक राजकुमारी के स्वयंवर में शामिल हो सकते हैं। जो कोई भी राजकुमारी के तीन प्रश्नों का उत्तर दे देगा, राजकुमारी उसी से विवाह करेंगी।

यह घोषणा सुनकर विवाह योग्य नवयुवक व राजकुमार राजमहल में एकत्रित हो गये।

राजकुमारी रत्ना वहाँ पर आई और नमस्कार करते हुए बोलीं, ''मेरे तीन प्रश्न बहुत ही सरल हैं। आप में से प्रत्येक को सोच-समझकर जवाब देना होगा। मगर हाँ में जवाब देने का साहस वही करे जिसे लगे कि जवाब सही है। अन्यथा गलत जवाब पर उम्मीदवार को सौ कौड़ों की सजा दी जाएगी। मेरे तीन प्रश्न इस प्रकार हैं– दरिद्र कौन है? धनी कौन है और जीवित रहते हुए भी मृत कौन है?''

राजकुमारी के प्रश्न सुनकर और सजा की बात पर अनेक उम्मीदवार वहाँ से

लौट गये। किसी को उन सवालों का सही हल नहीं पता था। अब केवल तीन उम्मीदवार ही वहाँ रह गये।

उन तीन उम्मीदवारों में से दो राजकुमार थे। दोनों राजकुमारों को लगता था कि उन्हें जवाब पता हैं किंतु फिर भी वह सजा के डर से बोल नहीं पा रहे थे। तीनों में एक वेदांत नाम का साधारण नौजवान भी था। जब दोनों राजकुमार चुप रहे तो वह आगे आया और बोला, ''राजकुमारी रत्ना यदि आज्ञा हो तो मैं आपके सवालों का जवाब देना चाहूँगा। साधारण से नौजवान को देखकर किसी को भी उम्मीद नहीं थी कि वह सही जवाब देगा।

वेदांत की बात पर राजकुमारी रत्ना बोली, ''आप अवश्य जवाब दीजिए। लेकिन साथ ही इस बात का भी ध्यान रखिए कि गलत होने पर आपको कोड़ों की सजा दी जाएगी।''

इस पर वेदांत बोला, ''राजकुमारी रत्ना मुझे स्वयं पर यकीन है कि मेरे जवाब सही होंगे और यदि गलत भी हुए तो कोई बात नहीं। मैं आपसे प्रेम करता हूँ इसलिए साहस कर जवाब देने के लिए आगे आया हूँ।''

फिर वह बोला, ''पहले प्रश्न का जवाब है कि जिसकी तृष्णा असीमित है, वह दरिद्र है। तृष्णा का भूखा धनी भी दरिद्र ही रहता है।'' वेदांत जवाब देने के बाद चुप हो गया। राजकुमारी रत्ना बोलीं, ''बिल्कुल सही। अब दूसरे प्रश्न का जवाब दीजिए।''

वेदांत बोला, ''जो पूर्ण रूप से संतोषी है, वही धनी है।''

यह जवाब भी सही है। राजकुमारी रत्ना बोली।

अब वेदांत बोला, 'आपके तीसरे प्रश्न का

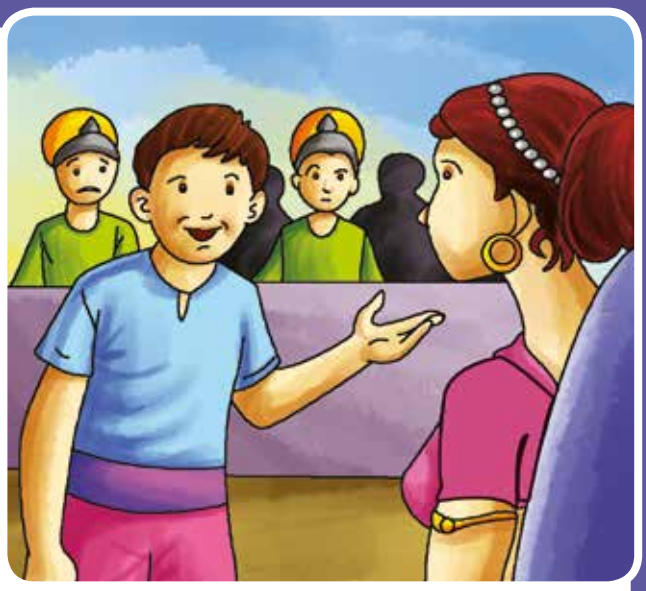

जवाब है कि उद्यमहीन और निराश व्यक्ति ही जीवित होते हुए भी मृत है।

राजकुमारी रत्ना वेदांत के जवाबों से बहुत प्रभावित हुई और बोलीं, ''बिल्कुल सही कहा तुमने। तुम राजकुमार नहीं हो लेकिन फिर भी राजकुमारों वाले गुणों से विभूषित हो। जिस व्यक्ति में संतोष, कर्मठता और धीरज के गुण होते हैं वह अपने लिए कामयाबी के रास्ते स्वयं खोल लेता है जैसे कि आज तुमने राजकुमार न होते हुए भी अपने लिए कामयाबी और सफलता के नये रास्ते खोल लिए हैं। मैं तुम्हारे साथ अपना नया जीवन शुरू करते हुए बेहद खुश हूँ कि मुझे जीवनसाथी के रूप में एक गुणवान और योग्य साथी मिला है।'' यह कहकर राजकुमारी रत्ना ने वेदांत के गले में जयमाला डाल दी।

राजा अजीतसिंह अपनी बेटी के चुनाव से बहुत खुश हुए और वेदांत को गले लगाते हुए बोले, ''हमारी समझदार बेटी ने अपने लिए बहुत सही वर चुना है। हम तुम दोनों के अच्छे और सुंदर भविष्य का आशीर्वाद देते हैं।'' इसके बाद राजकुमारी रत्ना वेदांत के साथ एक नये सफर की शुरूआत करने चल पड़ी।

प्रस्तुतिः राधा नाचीज़

पहेलियां

1

लालटेन पंखों में,
उड़े अंधेरी रात में।
जलती बाती बिना तेल के,
जाड़े व बरसात में।।

2

सीस कटे तो दल बने,
पैर हटाए बाद।
पेट निकाले बाल हैं,
करो, शब्द यह याद।।

3

दूर के दृश्यों को वह,
घर पर दिखलाता है।
उसका नाम बताओ बच्चो,
वह सबके मन को भाता है।।

4

पैर नहीं पर चलती हूँ,
कभी ना राह बदलती हूँ।
नाप-नाप कर चलती हूँ,
तो भी न घर से टलती हूँ।।

5

कितने रंगों से तन मेरा,
रच-रच कौन सजाता।
फूल गोद में ले लेकर,
झूला रोज झुलाता।।

6

मैं हूँ हरे रंग की रानी,
देखकर आए मुँह में पानी।
जो भी मुझको चबाए,
उसका मुँह ला हो जाए।।

7

पूँछ कटे तो सिया,
सिर कटे तो मित्र।
मध्य कटे तो खोपड़ी,
पहेली बड़ी विचित्र।।

8

धरती में मैं पैर छिपाता,
आसमान में शीश उठाता।
हिलता पर कभी न चल पाता,
पैरों से हूँ भोजन खाता।।
नाम है क्या मेरा भ्राता?

? पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें। ?

कविता : कमलसिंह चौहान

पुस्तक बोली

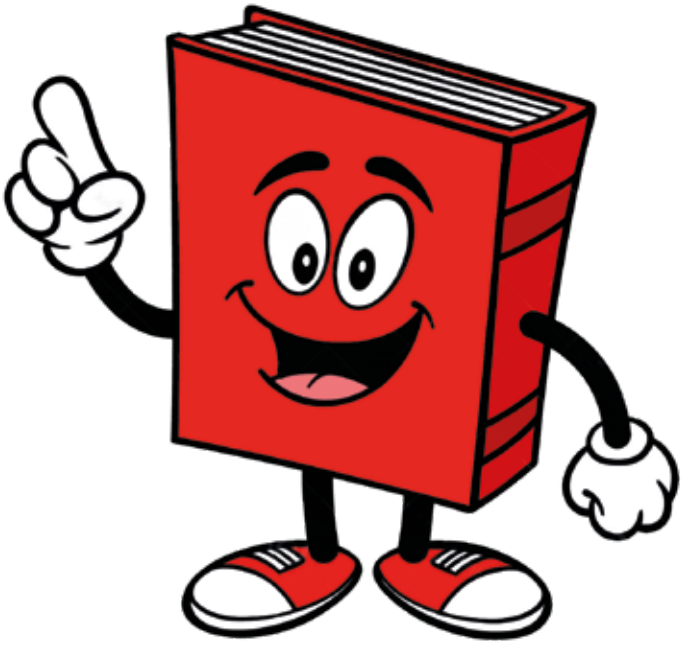

बच्चों ने अब पुस्तक खोली,
उसमें से कविता भी डोली।
पाठों ने मुस्कान बिखेरी,
गणित की भी बिछी रंगोली।

महापुरुष का पाठ है उसमें,
धरती का भी राज है उसमें।
विज्ञान की है खोज सुहानी,
खेती की है कुमकुम रोली।

संस्कृति की पहचान है पुस्तक,
ज्ञान की आवाज है पुस्तक।
रामकृष्ण का चरित्र है उसमें,
खोलो मुझको पुस्तक बोली।

पुस्तक हमसे कुछ नहीं लेती,
पढ़ो लिखो तो सब कुछ देती।
मुझको पढ़कर महान बने सब,
हँसते हँसते पुस्तक बोली।

कविता : हरिन्दर सिंह गोगना

बच्चे

द्वेष, कपट, छल से अनजान,
चंचल, मासूम, हठी, नादान।

बच्चे होते कितने प्यारे,
सबकी होते आँख के तारे।

भेदभाव न जानें बच्चे,
तभी तो लगते हैं अच्छे।

फिक्र गमों से दूर रहते,
अपनी मस्ती में चूर रहते।

बच्चों की हर एक अदा,
होती है सबसे जुदा।

धरती पर है स्वर्ग वहाँ,
मुस्कुराता है बचपन जहाँ।

जानकारीपूर्ण विशेष लेख : विद्या प्रकाश

तितलियों का अनोखा संसार

बगीचों में फूलों पर मंडराने वाली रंग-बिरंगी और सुन्दर पंखदार तितलियां देखने में तो आकर्षक होती ही हैं। वे परागण के माध्यम से नवीन पौधों के पनपने तथा बीजों के अंकुरण में भी सहायक होती हैं।

इन तितलियों के जन्म तथा विकास की प्रक्रिया रोचक है तथा अण्डे से वयस्क तितली बनने तक इस कीट को चार अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। वनस्पति विज्ञान की भाषा में इस प्रक्रिया को मेटाफार्मोसिस (कायान्तरण) कहा जाता है। इस परिवर्तन प्रक्रिया के प्रत्येक पड़ाव में उसके आकार, रंग तथा जैविक संरचना में बिल्कुल बदलाव आ जाता है। तितली के वृक्षों तथा लताओं की हरी पत्तियों पर रेंगने वाले शिशु को देखकर व्यक्ति अन्दाजा भी नहीं लगा सकता कि एक दिन यह सुन्दर तितली की शक्ल में इन्द्रधनुषी पंख फड़फड़ाते हुए फूल पर मंडरायेगा।

मादा तितली किसी ऐसे पौधे अथवा पेड़ पर अण्डे देती है जिसकी पत्तियां उसके शिशु जिसे अंग्रेजी में 'कैटरपिलर' तथा हिन्दी में 'इल्ली' कहा जाता है, के लिए बढ़िया खुराक साबित हो। कुछ समय के उपरान्त कैटरपिलर अण्डों से बाहर आ जाते हैं तथा फिर शुरू होता है उसका जीवन चक्र। अण्डों से बाहर आने वाला कैटरपिलर बहुत भुक्खड़ होता है तथा हरी पत्तियों से भोजन ग्रहण कर बहुत तेजी से बढ़ता है। इसकी शारीरिक वृद्धि इतनी तेजी से होती है कि मोटापे से कैटरपिलर की त्वचा फट जाती है। त्वचा फटने से उसकी जान को कोई खतरा नहीं होता। कुदरत ने ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि बाल्यावस्था की बाहरी त्वचा के नीचे छिपी नवीन त्वचा सामने आ जाती है। जिसमें उसके बढ़ते शरीर का भार तथा विस्तार सम्भालने की अधिक क्षमता पायी जाती है।

प्रत्येक कैटरपिलर अपने चारों तरफ एक कठोर खोल जैसा बनाता है जिसे बॉटनी की शब्दावली में 'प्यूपा' कहा जाता है। प्यूपा के अन्दर इसका शरीर अर्द्ध ठोस अवस्था में परिवर्तित हो जाता है। प्यूपा अपने अन्दर उसके शरीर को किसी मजबूत

तिजोरी की तरह सम्भाले तथा बाह्य प्रभावों से बचाये रखता है ताकि इसमें होने वाले नवीन परिवर्तनों के दौरान वह किसी बाहरी नुकसान और खतरों से पूरी तरह सुरक्षित रह सके।

प्यूपा के भीतर मौजूद कीट का अर्द्ध ठोस शरीर क्रमशः तितली के रूप में परिवर्तित होने लगता है। जब प्यूपा के अन्दर मौजूद तितली इसे तोड़कर बाहर निकलती है तो उसके पंख काफी नरम तथा सिकुड़े हुए होते हैं। सूरज की गर्मी में इसके पंख सूखकर फैल जाते हैं तथा मजबूत भी हो जाया करते हैं। इसके कुछ ही घण्टों के बाद एक नन्हीं सी तितली बगीचे में डाल पर मंडराने तथा पुष्पों के मकरन्दपान के लिए तैयार हो जाती है।

मादा तितली अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में 50,000 से अधिक अण्डे देती है। एक फूल से दूसरे फूल तक उड़-उड़कर मकरन्दपान करने वाली तितलियां परागण में सहायक होती हैं। ये फूलों का मीठा रसपान स्वाद के लिए नहीं करती। इससे उन्हें उड़ने के लिए आवश्यक शक्ति प्राप्त होती है। नन्हीं-सी दिखने वाली तितली लम्बी दूरी की उड़ान भरने में चैम्पियन होती है। प्रतिवर्ष सर्दी में अनुकूल मौसम तथा आहार की तलाश में 'मोनार्क बटरफ्लाई' नामक तितली कनाडा से मैक्सिको तक का लगभग 3500 किलोमीटर लम्बी यात्रा पर निकल जाती है। वैसे तो तितली बहुत शरीफ तथा शान्तिप्रिय होती है लेकिन इसकी एक किस्म 'पीकॉक बटरफ्लाई' शिकारी चिड़ियों में दहशत पैदा कर देती है।

दरअसल जब कोई शिकारी चिड़िया इसे खाने की लालच में नजदीक आती है तो वह अपने पंख फैला देती है जो दो खतरनाक घूरने वाली आँखों की तरह दिखते हैं।

बाल कहानी : राजकुमार 'राजन'

लालच का फल

झींगू और ढींगू चूहों में गहरी दोस्ती थी। दोनों एक ही घने बरगद के पेड़ तले की मांद में रहते थे। झींगू बहुत ही शान्त स्वभाव का और नियम का पक्का था जबकि ढींगू गुस्सैल और लालची था।

कभी झींगू ढींगू के लिए ताजा अखरोट ढूंढ़ कर लाता तो कभी ढींगू दानेदार मूंगफली झींगू के लिए लाता। मुसीबत के समय भी दोनों एक-दूसरे की मदद करते। ढींगू के गुस्सैल स्वभाव से झींगू बहुत दुखी रहता। वह ढींगू चूहे को कई बार समझाने की कई कोशिशें कर चुका था।

एक शाम दोनों अपनी मांद में लौटे तो ढींगू चूहे के पेट में जोर से दर्द हो रहा था। हुआ यह था कि सुबह जब ढींगू भोजन की तलाश में पास के खेत की तरफ गया तो उसे वहाँ मूंगफली का ढेर दिखाई दिया।

बस, फिर क्या था। ढींगू खेत में उतर गया और लालची स्वभाव होने के कारण भूख से कहीं ज्यादा मूंगफलियां खा गया। मूंगफली होती है पचने में भारी। इसलिए शाम को उसके पेट में दर्द होने लगा। रातभर वह दर्द से कराहता रहा।

सवेरा हुआ तो झींगू बोला, ''आज हम भोजन की तलाश में बाहर नहीं जाएंगे। तुम कुछ देर आराम करो, मैं तुम्हारे लिए खिचड़ी पकाऊँगा। हल्का खाना खाने से तुम्हारा पेट ठीक हो जाएगा।''

झींगू ने बड़ी मेहनत से खिचड़ी बनाने का सामान जुटाया। गुलगुल गिलहरी से दाल ली। चिम्पू खरगोश से नमक व घी मंगवाया। भोलू कबूतर ने बर्तन दिये और मुनिया मुर्गी आग ले आई। चावल उसकी मांद में पहले से ही रखे थे। झींगू चूहा पास ही नदी से पानी ले आया। बड़ी मेहनत से खिचड़ी बनाई गई।

जब खिचड़ी बनकर तैयार हो गई तो झींगू ने ढींगू से कहा, ''मैं नहाने जा रहा हूँ। लौटकर दोनों साथ-साथ खिचड़ी खाएंगे। तब तक तू आराम कर।''

झींगू नहाने चला गया तो ढींगू ने सोचा कि झींगू तो देर से वापस आएगा, तब तक मैं थोड़ी-सी खिचड़ी चखकर देख लूं कि कैसी बनी है। उसने खिचड़ी चखी तो वह उसे बहुत स्वादिष्ट लगी। उसने थोड़ी-सी और खा ली। पर वह था बहुत लालची, थोड़ी-थोड़ी करके वह अपने हिस्से की सारी खिचड़ी खा गया।

फिर भी उसका मन नहीं भरा तो उसने झींगू के हिस्से की खिचड़ी भी खा ली। उसका पेट तो पहले से ही खराब था, अब जो उसने इतनी सारी खिचड़ी अकेले ही खा ली थी तो उसका पेट फूलने लगा। वह दर्द से तड़पने लगा।

झींगू नहाकर लौटा तो ढींगू को उसने तड़पता हुआ पाया। उसने 'आव देखा ना ताव', झट से जंगल की डॉक्टर पूसी बिल्ली को बुलाने दौड़ पड़ा। वह खिचड़ी की बात ही भूल गया था।

ढींगू ने तड़पते हुए ढेर सारा पानी और पी लिया। पानी पीया ही था कि उसका पेट एकदम से फट गया और ढींगू चूहा वहीं ढेर हो गया।

झींगू चूहा जब डॉक्टर पूसी बिल्ली को लेकर वापस आया और उसने ढींगू का यह हाल देखा तो उसकी आँखों में दुःख के आँसू भर आए। वह सोच रहा था कि यदि ढींगू लालच न करता और मेरे हिस्से की खिचड़ी न खाता तो उसका यह हाल न होता।

अनार

जानकारीपूर्ण लेख :
शिवचरण चौहान

आपने 'एक अनार, सौ बीमार' वाली कहावत जरूर सुनी होगी। वही अनार, जिसके लाल-लाल खट्टे-मीठे दाने तुम्हें खाने में बहुत अच्छे लगते हैं या जिसका जूस भी तुम अक्सर पीते होगे।

अनार एक मध्यम आकार का झाड़ीदार वृक्ष है। यह पाँच फुट से लेकर 15 फुट तक ऊँचा होता है। अनार की छोटी-छोटी लम्बी पत्तियां गहरे हरे रंग की होती हैं और इसमें लाल रंग के छोटे-छोटे फूल आते हैं। फल गोल, अमरूद व बेल जैसा होता है। कच्चा फल हरे रंग का किन्तु पकने पर पीले गुलाबी रंग का होता है। फल का ऊपरी भाग बेल के फल की तरह कठोर होता है। तोड़ने पर अन्दर लुग्दी में लिपटे हुए चमकीले बीज निकलते हैं। बीज ही खाए जाते हैं और बीज का ही रस निकाला जाता है। बीमार व्यक्ति के लिए, अनार रामबाण का कार्य करता है। यह बुखार दूर करता है, जीभ का स्वाद ठीक कर भूख बढ़ाता है। इसी कारण सम्भवत: एक अनार सौ बीमार वाली कहावत चल पड़ी।

अनार का संस्कृत भाषा में 'दाडिमम्' हिन्दी में अनार, बंगाली में 'बेदाना', गुजराती में 'दाडम', मराठी में 'डालिंब', फारसी में अनार तथा अंग्रेजी भाषा में 'पोमेग्रेनेट' कहते हैं। औषधीय गुणों के कारण ही अनार की आयुर्वेद में महिमा गाई गयी है। आयुर्वेद में अनार को हल्का भोजन, भूख बढ़ाने वाला, रक्तवर्द्धक और बलवर्द्धक माना गया है।

एक अनार के एक सौ ग्राम दानों में 0.1 प्रतिशत वसा, 1.6 प्रतिशत प्रोटीन, 14.5 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 16 मिलीग्राम विटामिन बी तथा सी, 78 प्रतिशत जल तथा 0.7 प्रतिशत खनिज पदार्थ पाए जाते हैं। इसके अलावा फास्फोरस, कैल्शियम व लौह तत्व भी पाए जाते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार अनार खट्टा व मीठा दो प्रकार का होता है। खट्टे अनार के छिलके का रस, कफ सीरप का कार्य करता है और इसे एक चम्मच नियमित पीने से खांसी जाती रहती है। मीठा अनार, रक्तवर्द्धक व रक्तशोधक होता है। रक्त कैंसर में भी इसका रस उपयोगी पाया गया है। अनार के गूदे व छिलके चूसने से मुँह के छाले दूर होते हैं। अनार का रस पेट का दर्द, ऐंठन, दस्त के रोगियों के लिए बहुत लाभप्रद है। अनार के छाल का रस (अर्क) पेट के कीड़ों को नष्ट कर देता है। अनार के रस में केसर मिलाकर पीने से पुराना बुखार भाग जाता है, भूख लगती है और शक्ति का संचार होता है। अनार की छाल से बनाया गया मंजन दाँत मजबूत करता है। होठों व दाँतों की चमक बढ़ती है और मुँह की दुर्गन्ध घटती है। गुर्दे, आंतों की बीमारी, पाचनक्रिया की गड़बड़ी तथा हृदय रोग के रोगियों को नियमित अनार का सेवन करना चाहिए।

बाल कविता : सुमेष निषाद

प्यारी चिड़िया

चीं चीं करती नन्हीं चिड़िया।
डाल पे बैठी प्यारी चिड़िया।

शाम ढले तो सो जाती है।
भोर हुए ये उठ जाती है।

दाना चुगती पानी पीती।
आकर हरी डाल पर सोती।

वन में भीषण आग लगी थी।
आफत सब पर आन पड़ी थी।

चिड़िया चोंच में पानी लाती।
जंगल की वो आग बुझाती।

फिक्र नहीं कोई हंसी उड़ाये।
या फिर चिड़िया के गुण गाये।

अच्छे काम सदा करना है।
दुख से नहीं कभी डरना है।

बाल कविता : श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

कोयल

कोयल काली होती लेकिन, मधुरस घोले बोल।
उसकी मधुमय वाणी समझो, सचमुच है अनमोल।

जब-जब मधु रितु आती तब-तब, कोयल गाती गीत।
अपनी मीठी वाणी से वह, दिल लेती है जीत।

मीठी वाणी की महिमा का, पाठ हमें समझाती।
जब भी बोलो मधुरस घोलो, बात यही बतलाती।

रंग रूप की नहीं सदा ही, गुण की होती पूजा।
कोयल जैसा मीठा बोले, और नहीं है दूजा।

हम भी संकल्प आज लें, मीठा ही बोलेंगे।
सुनने वालों के कानों में, मिसरी सी घोलेंगे।

ऐतिहासिक कहानी : जितेन्द्र कुमार

चन्द्रगुप्त की चतुराई

सम्राट अशोक जिस मौर्य वंश के शासक थे। उसके संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य भी एक महान शासक थे। ये प्रथम भारतीय सम्राट थे; जिन्होंने राजनीतिक दृष्टि से समस्त भारत को एक सूत्र में बांधा था। चन्द्रगुप्त मौर्य बचपन में बहुत गरीब थे। इनकी माँ मुरा दाई का काम करती थी और ये खुद चरवाहे का काम करते थे। कहा जाता है कि 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात।' यह उक्ति चन्द्रगुप्त मौर्य पर पूरी तरह फिट बैठती थी। बचपन से ही उसमें शासक के गुण विद्यमान थे। एक दिन की बात है सभी गायें चर रही थीं, बालक चन्द्रगुप्त के साथ कई चरवाहे भी वहाँ इकट्ठा थे। हर रोज की तरह उनका खेल चल रहा था। एक ऊँचे टीले पर चन्द्रगुप्त बैठा था। उसने अन्य चरवाहों में से किसी को मंत्री, किसी को सेनापति आदि बनाकर राजदरबार लगा रखा था। चरवाहों में से ही कोई फरियादी बना हुआ था। तरह-तरह के फैसले बालक चन्द्रगुप्त बड़ी आसानी से एकदम राजा की तरह सुना रहा था। बालक चन्द्रगुप्त सभी चरवाहों का प्रमुख था। वह रोज इस तरह के खेल उनके साथ खेला करता था। उस दिन जब खेल चल रहा था उसी समय चाणक्य उधर से गुजर रहे थे। यह सब देखकर चाणक्य बड़े प्रभावित हुए, वे एक ब्राह्मण की तरह बालक चन्द्रगुप्त के सामने पहुँचे। चन्द्रगुप्त ने एक राजा की भांति उन्हें सम्मान देते हुए उनसे उनकी इच्छा पूछी।

चाणक्य ने कहा– राजन! मुझे गौ चाहिए।

बालक चन्द्रगुप्त ने राजर्षि अंदाज में कहा– हे ब्राह्मण! यहाँ गाय चर रही हैं। आपको जितनी गायें चाहिएं ले लीजिए।

तभी मुरा वहाँ पहुँची। चाणक्य से बालक की ढिठाई के लिए उसने माफी मांगते हुए अपनी दीन हालत बताई।

चाणक्य ने कहा– मुरा तुम्हारा पुत्र बड़ा होनहार है। तुम परसों इसे लेकर नंद के दरबार में आना।

चाणक्य के कहे मुताबिक मुरा निश्चित समय पर चन्द्रगुप्त को लेकर दरबार

में पहुँची। उसी समय अवन्ती के राजा के यहाँ से एक दूत राजा के लिए उपहार स्वरूप पिंजड़े में बन्द शेर तथा एक पत्र लेकर आया था। पत्र में लिखा था कि बिना पिंजड़े को खोले शेर को बाहर निकालना है।

राजा ने दरबार में घोषणा की कि वह कौन है जो ऐसा कर सकता है? मंत्री दरबारी सभी सन्न! किसी को कोई उपाय न सूझा।

बालक चन्द्रगुप्त अचानक कह उठा, महाराज! मुझे आज्ञा दीजिए। मैं इस शेर को पिंजड़ा खोले बिना बाहर निकाल दूंगा।

राजा ने उसे डांट दिया। तब चाणक्य ने राजा से उस बालक को एक मौका देने के लिए कहा।

''सुनो ढीठ बालक यदि तुम इस कार्य में सफल नहीं हुए तो तुम्हारा सर धड़ से अलग कर दिया जाएगा।'' राजा नंद ने कहा।

बालक ने भी उसी अंदाज में कहा– 'मंजूर है' और थोड़ी-सी आग और सूखी घास मांगी। आग मिलने पर उसने घास को आग लगाकर पिंजड़े में शेर के नीचे रख दिया। थोड़ी ही देर में शेर पिघल-पिघलकर गिरने लगा क्योंकि शेर मोम का बना था।

सभी लोग बालक की बुद्धिमत्ता पर वाह-वाह कर उठे। तब चाणक्य के कहने पर राजा ने उस बालक के सारे खर्च की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हुए उसे पढ़ने के लिए तक्षशिला भेज दिया। यही बालक बड़ा होकर एक दिन महान सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य बना।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
–प्रवीण कुमार

चलो, हम नदी के किनारे चलते हैं, खूब मज़े करेंगे।
लो, अब करो खूब मज़े। साफ़ सुथरे होकर बाहर निकलना।
बचाओ! बचाओ! मुझे तैरना नहीं आता।

रूको! रूको! मैं आ रही हूँ तुम्हें बचाने।
किट्टी, तुमने अच्छा नहीं किया, अगर चिंटू को कुछ हो जाता तो! चलो, अब हम सब घर चलते हैं।
मैं भाग-भाग कर सबसे पहले पहुँच जाती हूँ घर!

अरे! बचाओ! बचाओ! मैं कीचड़ में गिर गई।
हा, हा, हा, चलो अब किट्टी को नदी में फेंक देते हैं। इसके लिए साफ होना बहुत ज़रूरी है।
किट्टी को अब समझ आया 'जो बोवोगे वही काटोगे।'

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन'

कभी न भूलो

❖ जीवन में सफलता उसी को मिलती है जो बाल्यावस्था में अच्छे नियमों का पालन करते हैं। – महात्मा गाँधी

❖ यदि प्राप्त करना चाहते हो पहले अर्पित करो। – नेता सुभाषचन्द्र बोस

❖ सत्यपरायण मनुष्य किसी से घृणा नहीं करता। – महात्मा बुद्ध

❖ अहिंसा वास्तविक शक्ति का प्रतीक है।

– डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

❖ पवित्रता वह धन है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होता है।

❖ निरन्तर कार्य करने वाला व्यक्ति कभी दुखी नहीं होता। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

❖ प्रतिशोध दूरदर्शी नहीं होता।

– नेपोलियन

❖ आदर्शवादी व्यक्ति वह है जो दूसरों की समृद्धि में सहायक हो। – हेनरीफोर्ड

❖ बिना निराश हुए पराजय को सह लेना, पृथ्वी पर साहस की सबसे बड़ी परीक्षा है।

– इंगरसोल

❖ अपवित्र कल्पना भी उतनी ही घातक है जितना कि अपवित्र कर्म।

– स्वामी विवेकानंद

❖ जो लोग प्रशंसा के लालची होते हैं वे साबित करते हैं कि वे योग्यता में गरीब हैं।

– प्लूटार्क

❖ क्षमा सबसे बड़ा दण्ड है।

❖ सर्वत्र स्वार्थ सिद्धि का स्वप्न देखने वाला एक दिन अवश्य ही अपने यश और सम्मान से हाथ धो बैठता है। – अज्ञात

❖ कदम, कलम और कसम हमेशा सोच समझकर उठाना चाहिए।

– डॉ. ऐपीजे अब्दुल कलाम

❖ कोशिश करने वालों को कामयाबी मिलती है और इंतजार करने वालों को सिर्फ इंतजार ही मिलता है। – लाल बहादुर शास्त्री

❖ जीवन की डोर ईश्वर के हाथ में है इसलिए चिंता की कोई बात हो ही नहीं सकती।

– सरदार वल्लभ भाई पटेल

❖ अहंकार मनुष्य का बहुत बड़ा दुश्मन है। वह सोने के हार को भी मिट्टी बना देता है।

– महर्षि वाल्मीकि

❖ वृद्धजन की सेवा ही विनय का आधार है।

– चाणक्य

❖ भ्रम के नष्ट होने पर ही प्रभु प्राप्ति संभव है।

– संत रविदास

बाल गीत : राजेंद्र निशेश

मैं नभ में नहीं अकेला

न मैं सितारा, न ही ग्रह हूँ,
उपग्रह बस कहलाता हूँ।
बच्चों का मैं चन्दा-मामा,
दूर गगन में रहता हूँ।।

पृथ्वी का मैं राज-दुलारा,
गिर्द इसके ही चलता हूँ।
इसीलिए मैं घटता बढ़ता,
और कभी छिप छलता हूँ।।

लेकर रवि से प्रकाश को मैं,
अपना पुँज दिखलाता हूँ,
अपनी शीतल किरणों के बल,
सबके मन को भाता हूँ।।

मैं नभ में नहीं अकेला,
और चन्द्र भी रहते हैं।
शनि ग्रह के बियासी हैं वे,
ऐसा ज्ञानी कहते हैं।।

कविता : कुसुम अग्रवाल

पपीता
छैल-छबीला हूँ

रंग बदलता हूँ मैं लेकिन,
गिरगिट मेरा नाम नहीं।
जाता हूँ मैं सभी जगह पर,
शहर नहीं तो गाँव सही।।

बड़े जतन से सभी पालते,
मुझे पंसद भी करते हैं।
लेकिन पेट चीर खा जाते,
मुझसे तनिक न डरते हैं।।

पाचन क्रिया बनाता अच्छी,
आँखें स्वस्थ बनाता हूँ।
छोटा सा हूँ मगर विटामिन,
ए,बी,सी,डी लाता हूँ।।

बूझो बूझो कौन हूँ मैं,
हरा कभी या पीला हूँ।
धत् तेरी पहचान गए,
पपीता छैल-छबीला हूँ।।

बालकथा : ईलू रानी

मंत्री की चतुराई

एक था राजा। वह खूब दान दिया करता था। जो भी दीन-दरिद्र उसके दरवाजे पर आकर दान की याचना करता। उसे वह खुले दिल से दान दिया करता।

राजधानी के दूर क्षेत्र में रहने वाले एक गरीब किसान ने जब राजा के दान की शोहरत सुनी तो उसके गरीबी के जीवन में आशा की नवकिरणें फूटी। सोचा– यदि मैं भी अपनी गरीबी का दुखड़ा लेकर राजा के पास जाऊँ तो निश्चित ही दिन दूर हो जायेंगे गरीबी के।

बस, यही सोचकर वह राजदरबार की ओर चल दिया। रास्ते में उसके मन में विचार आया। राजा के पास खाली हाथ जाना उचित नहीं। सो कुछ उपहार लेकर चलना चाहिए। इसलिए उसने रास्ते में एक गन्ने के खेत के मालिक से आठ-दस मीठे-मीठे गन्ने खरीद लिये। फिर उनके एक-एक फुट के टुकड़े करके एक लाल पोटली में बांध लिये। मीठे गन्ने का बोझ लादे वह चले जा रहा था। रास्ते में जब उसे कुछ ज्यादा ही थकावट महसूस हुई तो एक पेड़ के नीचे लेट गया, पोटली उसी के सिरहाने पड़ी थी।

थोड़ी देर बाद उधर एक ठग अपना घोड़ा लेकर आया। किसान के पास पड़ी पोटली देखकर बड़ा खुश हुआ। उसने जैसे ही पोटली खोलकर देखा तो गुस्से में आग-बबूला हो उठा। सारे गन्ने चूसकर छिलके दूर फेंक आया और उसमें गन्ने के आकार की वैसी ही सूखी लकड़ियां भरकर आगे रवाना हो गया। किसान तो नींद में था। इस कारण उसे पोटली के बारे में कुछ पता न चला।

जब उसकी नींद खुली तो पोटली उठाकर चल पड़ा। चलते-चलते वह राजदरबार में जा पहुँचा। राजा ने उसके आने का कारण पूछा तो किसान हाथ जोड़कर बोला– महाराज! मैं आपके लिए यह तुच्छ भेंट लाया हूँ। सहर्ष स्वीकार कीजिएगा।

राजा के सेवक ने जैसे ही पोटली खोली। राजा सूखी लकड़ियों को देखकर गुस्से में तमतमाता हुआ बोला– तो तुम मेरा अपमान करने के लिए ही ये सूखी लकड़ियां मुझे भेंट में देने के लिए लाये हो।

पोटली में सूखी लकड़ियों को देखकर बेचारा किसान अचरज में पड़ गया।

राजा का बुद्धिमान मुख्यमंत्री गरीब किसान के चेहरे की स्थिति देखकर यह भांप चुका था कि इस गरीब किसान के साथ जरूर किसी ने चाल चली है। अतः जरूर इस निर्दोष को बचाना चाहिए।

अब मुख्यमंत्री ने गम्भीर स्वर में राजा को समझाते हुए कहा– महाराज! ये गरीब किसान आपको भेंट में देने के लिए ये सूखी लकड़ियां आपका अपमान करने के लिए नहीं लाया है। हाँ, वास्तव में सच पूछा जाए तो यह बेचारा बड़ा गरीब है। ये सूखी लकड़ियां आपको दिखाकर यह कहना चाहता है कि जैसे आग इन सूखी लकड़ियों को जलाकर भस्म कर देती है वैसे ही आप भी अपनी दानशीलता की आग में इसकी गरीबी जलाकर सदा के लिए भस्म कर दें।

अपने मुख्यमंत्री की इस चतुरता भरी बात को सुनकर राजा का गुस्सा शांत हो गया और उसने खुश होकर गरीब किसान को बहुत सा धन दान में देकर सम्मान के साथ विदा किया।

विशेष लेख : राजकुमार जैन

कैसे लौट आते हैं कबूतर अपने घर?

यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि हजारों मील दूर किसी अंजान, अज्ञात स्थान पर ले जाकर छोड़ दिये जाने पर भी कबूतर बिना रास्ता भटके अपने ठिकाने पर सुरक्षित लौट आता है।

कबूतर के इस गुण ने मनुष्य को कबूतर से पत्रवाहक का काम लिए जाने को प्रेरित किया। प्राचीनकाल में जब संचार व्यवस्था इतनी सुविकसित नहीं थी, कबूतर ही संदेशवाहक का कार्य बखूबी निभाता था। कबूतर के जिस्म में सूक्ष्म कैमरे और ट्रांसमीटर फिट कर जासूसी करने की बातें भी सर्वविदित हैं।

आज संसारभर के पशु-पक्षी विज्ञानी और अन्य विशेषज्ञ इस खोज में लगे हुए हैं कि आखिर कबूतर के हर बार अपने दड़बे में लौट आने की इस अद्‌भुत क्षमता का राज क्या है? गहन अनुसंधानों और शोध के पश्चात् इस क्षेत्र के अध्येताओं ने कम से कम एक निष्कर्ष तो निकाल ही लिया है। उनके अनुसार, कबूतर दिशा-ज्ञान के लिए सूर्य की स्थिति पर निर्भर करते हैं तथा सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच के समय को घर लौटने को आदर्श समय मानते हैं। प्रयोगों के दौरान अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि बादल छाये होने, रात होने अथवा किसी कारणवश सूरज के छिप जाने पर कबूतर की यात्रा का गणित गड़बड़ा जाता है। इसके आगे की खोज अभी जारी है।

कबूतर का दाम्पत्य जीवन अत्यंत प्रेमपूर्ण होता है। इस प्रकार कबूतर एक घरेलू किस्म का प्राणी माना जाता है। कुछ वैज्ञानिकों का कथन है कि यह 'गृह प्रेम' ही उसे बार-बार अपने ठिकाने पर लौटने को विवश करता है।

एक शोधकर्ता के निष्कर्षों के मुताबिक दाने की तलाश में भटकने की प्रवृत्ति ने इस पक्षी में यह विलक्षण क्षमता उत्पन्न की। प्राचीनकाल में कबूतर भोजन की खोज में भू-मध्य सागरीय क्षेत्र में मीलों दूर तक निकल जाते थे, फिर बिना भटके अपने घर लौट आते थे।

कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार, कबूतरों में कई मानवीय गुण पाये जाते हैं। कर्नल प्रयोगशाला के पशु-विज्ञानी चार्ल्स वाल्कट का मानना है कि कबूतर रास्ता ढूंढने के वास्ते संकेतों की मदद लेते

हैं। यदि यह सत्य है, तब भी हमें इस पक्षी की विलक्षण क्षमता और अद्‌भुत स्मरण शक्ति की प्रशंसा करनी होगी, जो इतने लंबे मार्ग के संकेतों को याद रख पाता है।

न्यूयॉर्क स्थित कर्नल यूनिवर्सिटी में पिछले ढाई दशक से भी अधिक समय से एक 'कबूतर प्रोजेक्ट' कार्यरत है, जो इस पक्षी के असाधारण गुणों, आदतों और क्षमताओं का निरंतर गहन वैज्ञानिक अध्ययन कर रहा है। इस प्रोजेक्ट में कबूतरों पर विभिन्न प्रकार के प्रयोग किये जाते हैं, जैसे चारों दिशाओं में कबूतरों के समूहों को उड़ा दिया जाता है तथा उन्हें रास्ता भटकाने के भरपूर प्रयास किये जाते हैं, लेकिन सभी कबूतर अंततः वापस अपने दड़बे में लौटकर वैज्ञानिकों के समक्ष पुनः एक प्रश्नचिन्ह बनकर खडे हो जाते हैं कि वे खोज करें कि इस चमत्कारिक क्षमता का रहस्य आखिर क्या है?

कबूतर की इस क्षमता की तह में जाने के लिए उसकी शारीरिक संरचना का गंभीर अध्ययन भी वैज्ञानिकों द्वारा निरंतर किया जाता रहा है। इटली के कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि कबूतर द्वारा दिशा-निर्धारण के लिए अपनी प्राणग्रंथियों का इस्तेमाल किया जाता है, किन्तु यह तथ्य अभी वैज्ञानिक स्तर पर स्थापित नहीं किया जा सका है।

न्यूयॉर्क के प्रख्यात पक्षी वैज्ञानिक मि. वालकोट ने कबूतर की आंख के गड्‌ढे के पीछे और मस्तिष्क के पास एक ऐसे टिश्यू (ऊतक) की खोज की है, जो मात्र एक वर्ग मी.मी. के आकार का है, किन्तु वह अत्यधिक लौह-तत्व से संपन्न है। रासायनिक संरचना की दृष्टि से यह लौह-तत्व वहाँ मेग्नेटाइट या लोड-स्टोन नामक खनिज के तौर पर मौजूद रहता है, जो एक चुम्बकीय पदार्थ है। 'बोस्टन संडे ग्लोब' नामक पत्रिका में प्रकाशित इस रिपोर्ट के मुताबिक अभी निश्चित तौर पर इस चुम्बकीय ऊतक और कबूतर की दिशा-ज्ञान के मध्य संबंध तो स्थापित नहीं किया जा सकता है, किन्तु इससे आगे शोध हेतु एक सूत्र जरूर प्राप्त हुआ है।

बहरहाल, इस विषय में अनुसंधान जारी है और उम्मीद की जानी चाहिए कि शीघ्र ही हम कबूतर की इस अद्‌भुत रहस्यमयी क्षमता के कारण जान सकेंगे।

पढ़ो और हँसो

विद्यार्थी : (टीचर से) सर! मुझे लिखना आ गया।
टीचर : बहुत अच्छा! कुछ लिखकर बताओ (विद्यार्थी ने कुछ लिखा।)
टीचर : क्या लिखा है? पढ़ के सुना तो।
विद्यार्थी : सर! अभी तक तो मैं केवल लिखना ही सीखा हूँ पढ़ना नहीं।

सोनू : (विक्की से) अरे पिंकी तू जो 'न्यूजपेपर' पढ़ रही है वह उलटा है।
पिंकी : तो क्या हुआ? मैं पढ़ थोड़े ही रही हूँ मैं तो केवल फोटो देख रही हूँ।

– अविनाश (बड़ौदा)

धन्नू जी का नौकर एकदम गँवार था। एक दिन धन्नू जी ने उसे समझाया– तुम सभ्यता सीखो। किसी को भी संबोधन करते समय उसके नाम के आगे 'जी' लगाया करो।

थोड़ी देर में नौकर दौड़कर धन्नू जी के पास आया– साहब जी, साहब जी! बाहर कुत्ते जी ने मुर्गे जी को पकड़ लिया है।

पापा : बेटा तुम तराजू और बाट अपने बैग में डालकर स्कूल क्यों ले जा रहे हो?
बेटा : पापा, मास्टर जी कहते हैं कि पहले हर बात तोलो फिर बोलो।

– रेनू (हिंगणघाट)

अमित : यार सुमित पिछले हफ्ते पैदा हुआ तुम्हारा भाई इतना रोता क्यों है?
सुमित : अगर तुम्हारा एक भी दांत न हो, सिर गंजा हो, तुम्हारे पैर इतने छोटे और कमजोर हो कि तुम खड़े भी न हो पाओ उस पर तुम कुछ भी न कह सकते हो तो मेरे ख्याल से तुम्हें भी उसकी तरह रोना आएगा।

छोटू : (बड़े भैया से) 'I don't know' का हिन्दी अनुवाद क्या होता है?
भैया : 'मैं नहीं जानता।'
छोटू : तो आपने अंग्रेजी में M.A. कैसे किया?

एक चिड़ियाघर में एक बच्चा शेर के पिंजरे के पास खड़ा था।
पापा : बेटे शेर से दूर हो जाओ।
बेटा : पापा आप चिन्ता मत करो मैं शेर का कुछ नहीं बिगाड़ूंगा।– विशाल (भरतपुर)

एक बन्दर पेड़ पर चढ़ा तो ऊपर बैठे लंगूर ने कहा– तू क्यों चढ़ा?
बन्दर : सेब खाने के लिए चढ़ा।
लंगूर : पर यह तो आम का पेड़ है।
बन्दर : मुझे पता है। सेब तो मैं साथ लाया हूँ।

– आशुतोष कुमार (मोदीनगर)

मारपीट में पकड़े गये एक व्यक्ति को थानेदार ने डांटते हुए कहा– कसम खाओ कि आज के बाद तुम किसी के भी बाल नहीं छुओगे?

पकड़ा गया व्यक्ति बोला– यह कसम मैं नहीं खा सकता। इस कसम के अलावा कोई भी कसम खा सकता हूँ।

थानेदार : क्यों?

व्यक्ति : हुजूर मेरा नाई का पेशा है।

– गुरमीत सिंह (इन्दौर)

सिक्योरिटी गार्ड से नौकरी के लिए इंटरव्यू में पूछा गया कि अंग्रेजी आती है?

गार्ड का शांतिपूर्ण जवाब– क्यों चोर इंग्लैंड से आएंगे क्या?

रामू एक दर्जी के पास गया।

रामू : पैंट की सिलाई कितनी है?

दर्जी : 500 रुपये।

रामू : और निक्कर की?

दर्जी : 200 रुपये।

रामू : (कुछ देर सोचकर) तो फिर निक्कर ही सिल दो, बस लम्बाई पैरों तक कर देना।

रिक्शावाला : आइए साहब! कहाँ चलना है?

आदमी : मैं आई.ए. नहीं बी.ए. हूँ।

रामू ने बस में 2 टिकट ली।

कंडक्टर : आपने दो टिकट क्यों ली?

रामू : एक खो गई तो दूसरी रहेगी।

कंडक्टर : अगर दूसरी खो गई तो?

रामू : तो 'पास' कब काम आयेगा।

एक बार टिंकू पैसे जमा करने बैंक गया।

कैशियर बोला : ये नोट फटा है, दूसरा दो।

टिंकू : मैं अपने अकाउंट में जमा कर रहा हूँ, फटा करूँ या नया तुम्हें इससे क्या मतलब है?

एक ट्रक दूसरे ट्रक को रस्सी से बाँधकर खींच रहा था। राह चलते एक व्यक्ति को हँसी आ गई।

वह कहने लगा– हे भगवान एक रस्सी को ले जाने के लिए दो-दो ट्रक।

सोनू : वहाट्सअप अपडेट कर लो।

मोनू : कैसे करते हैं?

सोनू : प्ले स्टोर पर जाओ और वहाँ से अपडेट कर लो।

मोनू : हमारे गाँव में प्ले स्टोर नहीं है, जनरल स्टोर है। वहाँ से कर लूं।

निर्मला : (गीता से) क्या बात है मटर-पनीर में पनीर नज़र नहीं आ रहा है।

गीता : अरे तुमने कभी गुलाबजामुन में गुलाब देखा है क्या?

– कंचन (धूलिया)

बाल कहानी :
राजेश अरोड़ा

सबसे बड़ा बल

सिंहराज देववन का राजा था। उसे अपने तन की शक्ति का बड़ा घमण्ड था। तन से वह जितना बलवान था, मन से उतना ही बलहीन था। इस कारण उसकी निर्णय क्षमता नगण्य थी। प्रजा पर नौकरशाह हावी थे। वन में चारों ओर अव्यवस्था का आधिपत्य था।

वन की ऐसी स्थिति देख पड़ोसी वन के राजा गब्बर सिंह ने सिंहराज पर धावा बोल दिया। युद्ध में सिंहराज बुरी तरह परास्त हो गया और अपनी जान बचाकर वन से भाग निकला।

उसने दूर एक पहाड़ की गुफा में शरण ली। इस गुफा में एक वृद्ध बन्दर तपस्या करता था। राजा उस गुफा में काफी समय तक छुपा रहा।

एक दिन राजा सिंहराज बैठे-बैठे रोने लगा। तपस्वी ने पूछा– 'सिंहराज! क्या बात है? तुम रो क्यों रहे हो?'

सिंहराज बोला– 'महात्मन्! मुझे मेरी मातृभूमि याद आ रही है। जिस मातृभूमि ने मुझे अन्न, जल, फल, फूल, औषधि और सुगंधित वायु सदैव प्रदान की। और अपनी गोद में मुझे आश्रय दिया। उस मातृभूमि का मुझ पर ऋण है। मैं अपनी मातृभूमि को मुक्त कराना चाहता हूँ। लेकिन मैं क्या करूँ? मैं हार चुका हूँ।

तपस्वी राजा के मन की कमजोरी समझ गया। बोला– 'राजन्! जिस प्राणी ने आत्मिक शक्ति (आत्म-बल) के अपार बल का अनुभव किया है। वह प्राणी ही दूसरों की शक्ति की सीमा को जान सकता है। राजन्! अपने आप में अपार आत्म-बल जगाओ और बढ़ाओ। तब समझ पाओगे कि आत्मिक शक्ति के सामने शारीरिक शक्ति मामूली और तुच्छ है। जिस पर तुम घमण्ड कर रहे हो।'

तपस्वी की तेजस्वी वाणी सुन राजा सिंहराज दहाड़ उठा। आकाश गूंज उठा। उसने अपने साथियों को इकट्ठा किया। फिर क्या था? सिंहराज ने गब्बर सिंह पर आक्रमण कर दिया। भयंकर युद्ध हुआ। गब्बर सिंह धराशायी हो गया। देववन आजाद हो गया।

सच कहा है– सबसे बड़ा बल आत्मबल ही होता है।

बाल कविता : रामअवध राम

आयी किरण

नभ से उतरी आयी किरण,
लायी सुखद सवेरा।
दिशा-दिशा में अपना,
बिखराई रंग सुनहरा।।

नभ से उतरी आयी किरण,
जल में छवि दिखलाई।
नन्हीं-नन्हीं ओस कणों में,
चमक अनोखी आयी।।

नभ से उतरी आयी किरण,
पत्ती-पत्ती पर छाई।
फूल-फूल हँसने लगे,
कली-कली मुस्कायी।।

नभ से उतरी आयी किरण,
सीख यही भरती मन में।
तुम भी अपने गुणों से,
चमको दुनिया में।।

बाल कविता : डॉ. तारा निगम

सूरज

भोर हुये सूरज आयेगा,
सारे जग को चमकायेगा।

सोता बच्चा जग जायेगा,
वो शाला पढ़ने जाएगा।

फूल चमन में खिल जायेगा,
तब भौंरा गुनगुन गायेगा।

जो सोता ही रह जायेगा,
वो फिर पीछे पछतायेगा।

प्रस्तुति : किरण बाला

जानवर पहचानते हैं भूकंप की आहट

प्राकृतिक प्रकोपों में सबसे भीषण प्रकोप भूकंप का होता है, जिसमें धरती कांप उठती है। विज्ञान चाहे जितना उन्नत हो गया हो, लेकिन भूकंप की भविष्यवाणी करना अभी उसके बस की बात नहीं है। हाँ, जानवरों को इसका पता पहले से ही चल जाता है यानी वे भूकंप की आहट पहचान लेते हैं।

एक अध्ययन से इस बात का पता चला है कि टोड मेढकों को भूकंप का पता पहले से ही चल जाता है। इसका पता लगा इटली के लाकिला शहर में आए भूकंप के समय, जब सारे टोड भूकंप से तीन दिन पहले ही पलायन कर गये थे। ये तब हुआ, जबकि भूकंप का केन्द्र उनके निवास से 74 किलोमीटर दूर था। हालांकि, पशु-पक्षियों के स्वभाव में भूकंप के आने से पहले हुए बदलावों का अध्ययन एक कठिन काम है, क्योंकि भूकंप किसी निश्चित समय पर नहीं आते।

पालतू पशु-पक्षियों पर भूकंप के प्रभावों का तो अध्ययन कुछ हद तक हुआ है, पर जंगली जीवों में इस तरह का अध्ययन मुश्किल है। अभी तक देखा गया है कि मछलियां, चूहे, सांप आदि भूकंप से पहले अजीब तरह का बर्ताव करने लगते हैं। मगर ये बदलाव भूकंप के कई दिन पहले नहीं होता, बल्कि भूकंप से कुछ ही देर पहले होता रहा है।

इससे पहले जीव-जन्तुओं के बारे में एक और महत्वपूर्ण अध्ययन भी संयोग से हुआ था, उसमें एक दूसरी ही तरह की बात सामने आई थी। अमेरिका के कैलिफोर्निया प्रदेश के मौजावे रेगिस्तान में 28 जून 1992 को एक अत्यंत शक्तिशाली भूकंप आया था। वहाँ वैज्ञानिकों का एक दल रेगिस्तानी चींटियों के बारे में अध्ययन कर रहा था। उन्होंने देखा कि 7.4 की तीव्रता वाले भूकंप के बावजूद चींटियों के सामान्य क्रियाकलापों पर कोई असर नहीं पड़ा।

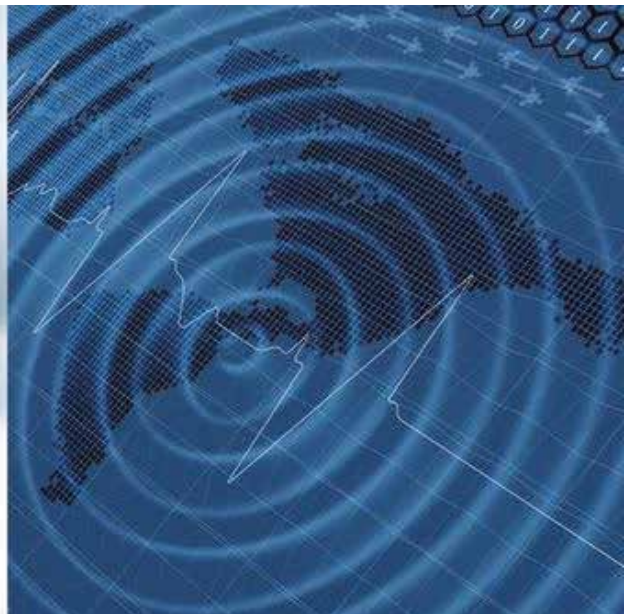

पहेलियों के उत्तर

1. जुगनू, 2. बादल,
3. दूरदर्शन, 4. घड़ी,
5. तितली, 6. पान,
7. सियार, 8. पेड़।

जून-जुलाई अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. ओम सोमजनी **14 वर्ष**
योगेश्वर सोसाइटी, सोमनाथ नगर,
गोधरा (गुजरात)

2. इधिका जिन्दल **10 वर्ष**
54, रोज कॉलोनी, राजपुरा रोड,
पटियाला (पंजाब)

3. स्वर्णजीत राणा **13 वर्ष**
सन्त निरंकारी सत्संग भवन,
आदर्श नगर, फगवाड़ा (पंजाब)

4. आरव गोकलानी **9 वर्ष**
म. नं. 20, गली नं. 3,
गुरुनानक कॉलोनी, बानूड़,
जिला : एस.ए.एस. नगर (पंजाब)

5. आर्या, कबीर हेमराजानी **9,11 वर्ष**
27, ग्रीन पार्क सोसाइटी,
अंकलेश्वर महादेव रोड,
गोधरा (गुजरात)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसन्द किया गया वे हैं-

कीर्ति (हुडा, शाहबाद मारकंडा), कृति (चित्रकूट, कर्वी), स्नेहा (ठाकुरपुरा), स्पर्श (भरोली कलां), देव (पलवल), सहज, सपना (सरदार नगर, अहमदाबाद), गुरपाल (बराड़ा), आरुषि (उप्पर भंजल), स्वस्तिका (सिडको, नासिक), अक्षरा सिंह (प्रयागराज), पुलकित (आलमपुर), अर्नव (सुजानपुर टीरा), रेयान (पंजाबी बाग, दिल्ली), आरोही (साकीनाका, मुंबई), श्रेया (लव-कुश नगर, जयपुर), आदिशा (भिलाई), विधिता (द्वारका, दिल्ली), जय, निशिका, ऋषि, विधि, देवांग, नैतिक, मुस्कान, हार्दिक, यशिका, शिव, चिराग, मोहित, मंथन, यशिका पंजवानी, चांदनी, आंचल, मुस्कान, शुभित रूयानी (गोधरा)।

अक्टूबर अंक रंग भरो

पेज नं. 50 पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 15 नवम्बर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) जनवरी 2022 अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

△ चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

△ 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

Nirankari Radio

radio.nirankari.org

24x7

Kids Divine

ek ruhani muskaan

kids.nirankari.org

Catch the latest episode on 23rd of every month

News Divine

www.nirankari.org

Catch the latest episode on 10th of every month

Bhakti Sangeet

radio.nirankari.org

Catch the latest episode on 20th of every month

Voice Divine

radio.nirankari.org

Catch the latest episode on 1st & 16th of every month

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं 'निरंकारी वेबसाइट' पर

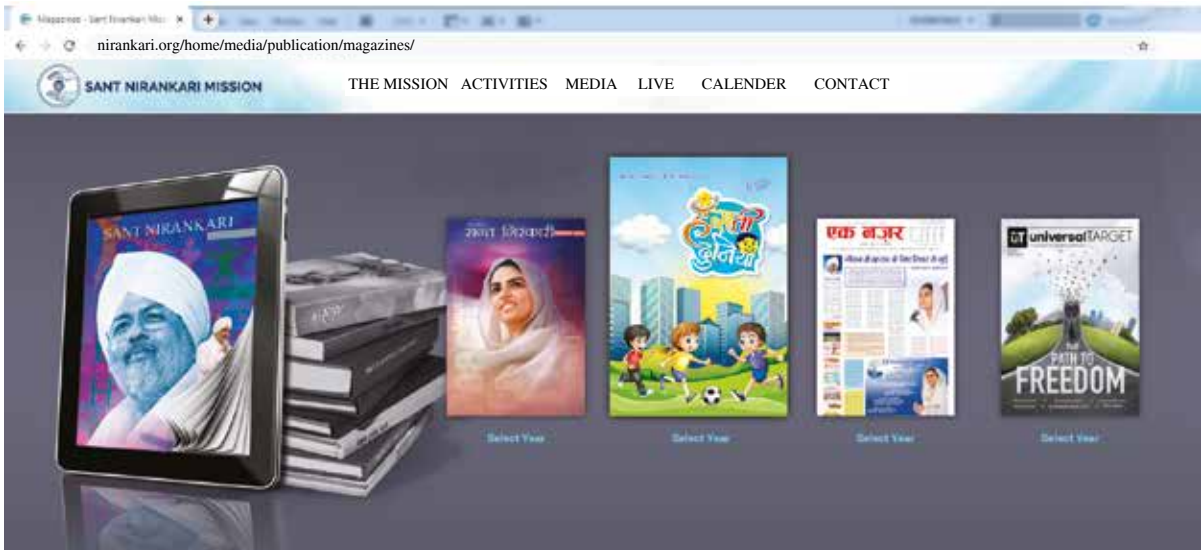

निरंकारी वेबसाइट पर सभी भाषाओं की 'हँसती दुनिया' , 'सन्त निरंकारी' एवं 'एक नज़र' को पढ़ने के लिए इन निर्देशों का पालन करें–

www.nirankari.org को **open** करेंगे तो **Main** पेज पर आपको **THE MISSION, ACTIVITIES, MEDIA and GALLERY** दिखाई देंगे। आपको **MEDIA** के **PUBLICATIONS option** को क्लिक करना है। यहाँ आपको सम्पूर्ण अवतार बाणी, सम्पूर्ण हरदेव बाणी, **E-BOOKS, Articles** और **Magazines** दिखाई देंगे। **Magazines** को क्लिक करते ही सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र तथा **Universal Target** के पेज खुल जाएंगे। यहाँ आप जो भी पत्रिका पढ़ना चाहते हैं, पढ़ सकते हैं।

– प्रबन्ध सम्पादक, पत्रिका विभाग

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि **एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–**

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

– प्रबन्ध सम्पादक

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्प्लेक्स, बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।